चन्दामामा
जून १९७१
75 P

GOLD STAR
Peppermint
Parle

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिन भर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है और कोलगेट विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का— अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८४ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है— इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

COLGATE DENTAL CREAM

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए... दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

DC. G. 41 HN
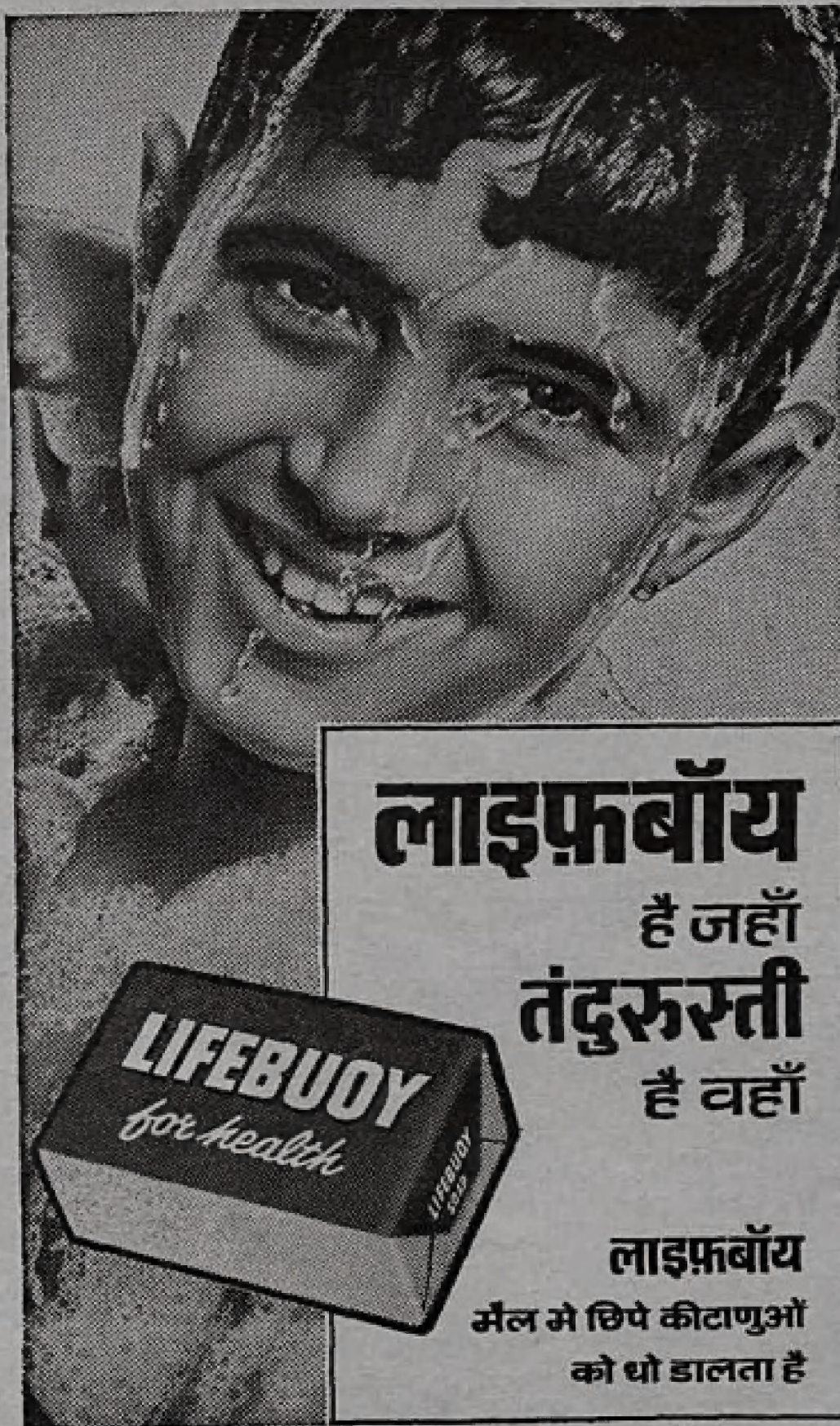
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती
है वहाँ
LIFEBUOY
for health
लाइफ़बॉय
मैल मे छिपे कीटाणुओं
को धो डालता है
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

चन्दामामा
संचालक : चक्रपाणी
मानव जीवन परोपकार पर निर्भर है। जो उपकार करते हैं, उनके प्रति अपकार करने वाले कृतघ्न भी होते हैं। इस आधार पर उपकार करना अपराध मानना उचित नहीं है। यह नीति 'उपकार-एक अपराध' नामक कहानी में तथा पूर्ण जीवन बिताने के लिए मौत रोड़ा नहीं बने, यह नीति 'तीन खतरे' नामक बेताल कथा में पायी जाती है।
वर्ष : २३ जून १९७१ अंक : १०
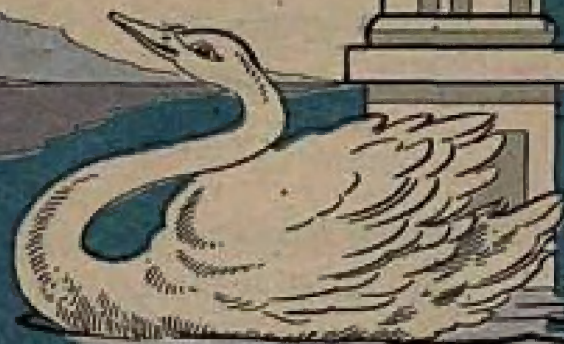
वरं तुंगा च्छृंगा द्गुरू शिखरिण: क्वापि विषमे
पतित्वायं काय: कठिन दृषदंते विदलित:
वरं न्यस्तो हस्त: फणिपतिमुखे तीक्ष्णदशने,
वरं वह्नौ पात:, तदपि न कृत : शीलविलय: ॥ १ ॥

[शील को खोने के बदले ऊँचे पहाड़ पर से कठोर उतार-चढ़ाव वाली शिलाओं पर गिरकर देह का त्याग करना कहीं उत्तम है। तीक्ष्ण दाढ़ों वाले सांप के मुँह में हाथ रखना कहीं अच्छा है, और अग्नि में कूद पड़ना और भी उत्तम है।]

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता, शौर्यस्य वाक्संयम:
ज्ञान स्योपशम:, श्रुतस्य विनयो, वित्तस्य पात्रे व्यय:,
अक्रोध स्तपस: क्षमा प्रभवितु, द्धर्मस्य निर्व्याजता,
सर्वेषा मपि सर्व कारण मिदं शीलं परं भूषणं। ॥ २ ॥

[ऐश्वर्यवान में सौजन्यता, वीर में कम बोलना, ज्ञानी में सहनशीलता, धनी में उचित दान करने की प्रवृत्ति, तपस्वी में क्रोध का न होना, ज्ञानी में विनय, धर्मात्मा में दुर्गुण ढूंढ़ने का प्रयत्न न करना, इन सब में शील ही बड़ा भूषण है।]

उपकार-एक अपकार

एक देश का राजा एक दिन शिकार खेलने जंगल में गया और अपने सिपाहियों से छूट गया। उस वक्त उसने एक आदमी को शेर से लड़ते देखा। राजा ने तुरंत अपने बाण चलाकर शेर को गिरा दिया और अपनी तलवार से शेर का सर काटकर पूछा–"तुम कौन हो?"

"मैं अपना परियचय दूंगा। पहले तुम अपने हाथ तो फैलाकर दिखाओ।" उस आदमी ने जवाब दिया। राजा ने आश्चर्य के साथ अपने हाथ बढ़ाये। तुरंत ही उस आदमी ने राजा के दोनों हाथ मिलाकर बाँध दिया और उसके सभी आभूषण लेकर कहा–"मैं चोर हूँ।"

चोर की करनी पर चकित हो राजा नें पूछा–"अगर मैंने शेर को न मार डाला होता तो शेर ने अब तक तुमको मार डाला होता।"

"मैंने आप से अपनी जान बचाने की प्रार्थना नहीं की। शेर के द्वारा मैं नहीं मरा, इसलिए मुझे अपना पेशा करना जरूरी है।" चोर ने जवाब दिया। इसके बाद वह राजा के सारे आभूषण लेकर कहीं चला गया।

थोड़ी देर बाद राजा के सैनिक उसे ढूंढ़ते आ पहुँचे और राजा के बंधन खोल दिये।

राजा ने अपने नगर में लौटने पर यह ढिंढोरा पिटवा दिया–"आज से इस राज्य में परोपकार एक अपराध के रूप में माना जायगा और परोपकार करनेवालों को कठिन दंड दिया जायगा।"

यह ढिंढोरा सुनकर राजा के दरबारी, नौकर-चाकर ही नहीं, प्रजा भी डर गयी।

राजा ढिंढोरा पिटवाकर चुप न रहा। बल्कि परोपकार करनेवालों को पकड़ने के लिए जासूसों को नियुक्त किया। गुप्तचर

विमवलर्मा

कुछ लोगों को पकड़ लाये, राजा ने उनको कारागार में रखवाया।

राजा की इस करनी को मंत्री सहन नहीं कर पाया। उसने इस कार्य को रोकने के लिए एक उपाय सोचा। मंत्री को मालूम हुआ कि राजा के मन में यह विचार पैदा करनेवाला चोर राहगीरों को बुरी तरह लूट रहा है। मंत्री अपना वेष बदलकर थोड़ा धन लिये जंगल में जा पहुँचा। उसकी कल्पना के अनुसार चोर ने मंत्री को रोका और उसका धन छीन लिया।

"अरे, इस देश के राजा की नौकरी से तंग आकर मैं देशाटन पर निकला तो तुम कहाँ से टपक पड़े?" मंत्री ने पूछा।

"तुम क्या राजा के पास नौकरी करते हो?" चोर ने पूछा।

"हाँ, चाहे तो तुम राजा का खज़ाना लूट लो।" मंत्री ने चोर को उकसाया।

"खज़ाने को लूटने में तुम मेरी मदद करोगे तो मैं तुमको उसमें हिस्सा दूंगा।" चोर ने कहा।

"राजा का खज़ाना लूटना चाहोगे तो मैं ख़ुशी से तुम्हारी मदद करूँगा।" मंत्री ने जवाब दिया। उस रात को जब वे राजमहल के पास पहुँचे तब मंत्री चिल्ला उठा—"चोर! चोर! पकड़ो।" पहरेदार ने आकर चोर को पकड़ा।

दूसरे दिन राजा ने चोर को देखते ही आदेश दिया—"इस दुष्ट का सर काट डालो।"

यह बात सुनते ही मंत्री ज़ोर से रो पड़े।

"चोर का सर काटने के लिए आदेश दूं तो तुम क्यों रोते हो?" राजा ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"महाराज, आप इस चोर का वध कराकर देश का बड़ा उपकार तो कर रहे हैं। मगर उपकार करने का अपराधी बनने जा रहे हैं।" मंत्री ने समझाया।

राजा की आँखें खुलीं। उसने उपकार करनेवालों को कारागार से मुक्त कराया और उपकार एक अपराध वाले क़ानून को रद्द कर चोर को फाँसी की सज़ा दी।

मृत औरत के बच्चे

एक गाँव के एक आदमी ने अपनी इच्छा से एक युवती के साथ शादी की। एक साल बाद उन्हें एक बच्चा हुआ। जब बच्चा छोटा ही था, तभी उसकी माँ मर गयी। उसको पेटी में रखकर दफ़नाया गया। उस औरत के माँ-बाप और भाइयों ने बताया कि हम इस लड़के को पाल-पोसकर बड़ा करेंगे। मगर लड़के के बाप ने हठ किया कि वही अपने बच्चे को पालेगा। लड़के का पालन-पोषण करने के लिए वह एक बूढ़ी को अपने घर बुला लाया। रात के वक़्त बूढ़ी झूले के पास लेटती और रात-भर बच्चे का ख्याल रखती।

दो महीने बीत गये। एक दिन संध्या के समय मालिक घर लौटा और बच्चे को अपने हाथों में लिये उसे चूमते हुए बोला— "बच्चा, अच्छा बढ़ रहा है। सौ साल जिओ, बूढ़ी माई।"

"यहाँ जो कुछ हो रहा है, तुम जानते ही क्या हो? हर रात को इस बच्चे की माँ आ जाती है, अलमारी से खाना निकाल कर खाती है, दूध पीती है, बच्चे को दूध पिलाती है। उसका सारा शरीर पोंछ लेती है। कपड़े बदलती है, तब बच्चे को चूम कर उसे झूले में लिटाती है, और कहीं चली जाती है। मैं इस तरह हर रात को उसे देखती हूँ, मगर उससे बात करने की हिम्मत नहीं हो रही है।"

"अगर मुझे यह बात मालूम होती तो मैं उसे जाने न देता। उसे रोकने का प्रयत्न करता।" मालिक ने कहा।

"अब भी कुछ बिगड़ा नहीं। आज रात जागते रहो। जब वह आ पहुँचेगी तब खाँस दूँगी।" बूढ़ी ने समझाया।

उस रात को घर का मालिक अपने कमरे में जागता रहा। बड़ी रात गये

किवाड़ को ढकेलने की आवाज़ हुई। मरी हुई औरत अन्दर आ गयी। झूले में सोनेवाले बच्चे को चूम लिया। अलमारी के पास जाकर उबाले गये आलू और दूध लेकर खाया-पिया, इसके बाद अलाव के पास बैठकर ऐसा अभिनय करने लगी, मानों सर्दी से परेशान हो; फिर झूले के पास आयी, बच्चे को गोद में लेकर दूध पिलाया। उसका शरीर पोंछा, कपड़े बदले। बच्चे को झूले में लिटाकर खड़ी हो गयी, फिर अपने पति के सोनेवाले कमरे की ओर देख गहरी साँस ली और जाने को हुई।

उस वक़्त बूढ़ी खाँस उठी। मरी हुई औरत चली गयी।

"तुम जागते हो या सोते हो?" बूढ़ी ने पूछा।

"मैं जाग रहा हूँ।" यह कहते मालिक अपने कमरे से बाहर आया।

"तुमने अपनी औरत को देखा?"

"देखा, मगर पास जाने में डर लगा।" मालिक ने जवाब दिया।

सबेरा होते ही वह अपने ससुराल चला गया। उसके सास-ससुर और तीनों सालों ने लड़के की खैरियत पूछी। उसने अपने घर की कहानी सुनायी।

"कल रात को मैंने अपनी पत्नी को देखा। मैंने उसके जाते रोकना चाहा, लेकिन मेरे हाथ-पैर डर के मारे नहीं हिले।" बच्चे के बाप ने बताया।

"तुमने कैसी भूल की? अगर मैं वहाँ होता तो उसको जाने नहीं देता।" बड़े साले ने कहा।

"तब तो मेरे साथ चलो, आज रात को जब वह लौटेगी, तब तुम अपनी बहन को पकड़ लो।" बच्चे के बाप ने जवाब दिया।

दोनों लौट आये। उस रात को वे जल्द ही सोने के कमरे में गये और मरी हुई औरत का इंतजार करने लगे।

रोज़ की भांति ठीक समय पर वह किवाड़ ढकेल कर अन्दर आयी। अलाव के पास हाथ सेंक कर अलमारी के पास गयी। खाने-पीने की चीज़ें लीं, खा चुकने के बाद बच्चे को गोद में लेकर दूध पिलाया। उसको धोकर कपड़े बदले, फिर झूले में लिटाकर अपने पति के कमरे की ओर देखा। गहरी साँस लेकर बाहर चली गयी।

"तुम लोग सो रहे हो?" बूढ़ी ने पुकारा।

"नहीं।" ये शब्द कहते दोनों कमरे से बाहर आये।

"तुम जैसे कायरों को मैंने कहीं नहीं देखा।" बूढ़ी ने जवाब दिया।

दूसरे दिन दूसरा साला आया। मगर वह भी अपनी बहन के पास जाने में घबरा गया।

तीसरे ने कहा—"अगर उस वक़्त मैं होता तो उसको जाने नहीं देता।"
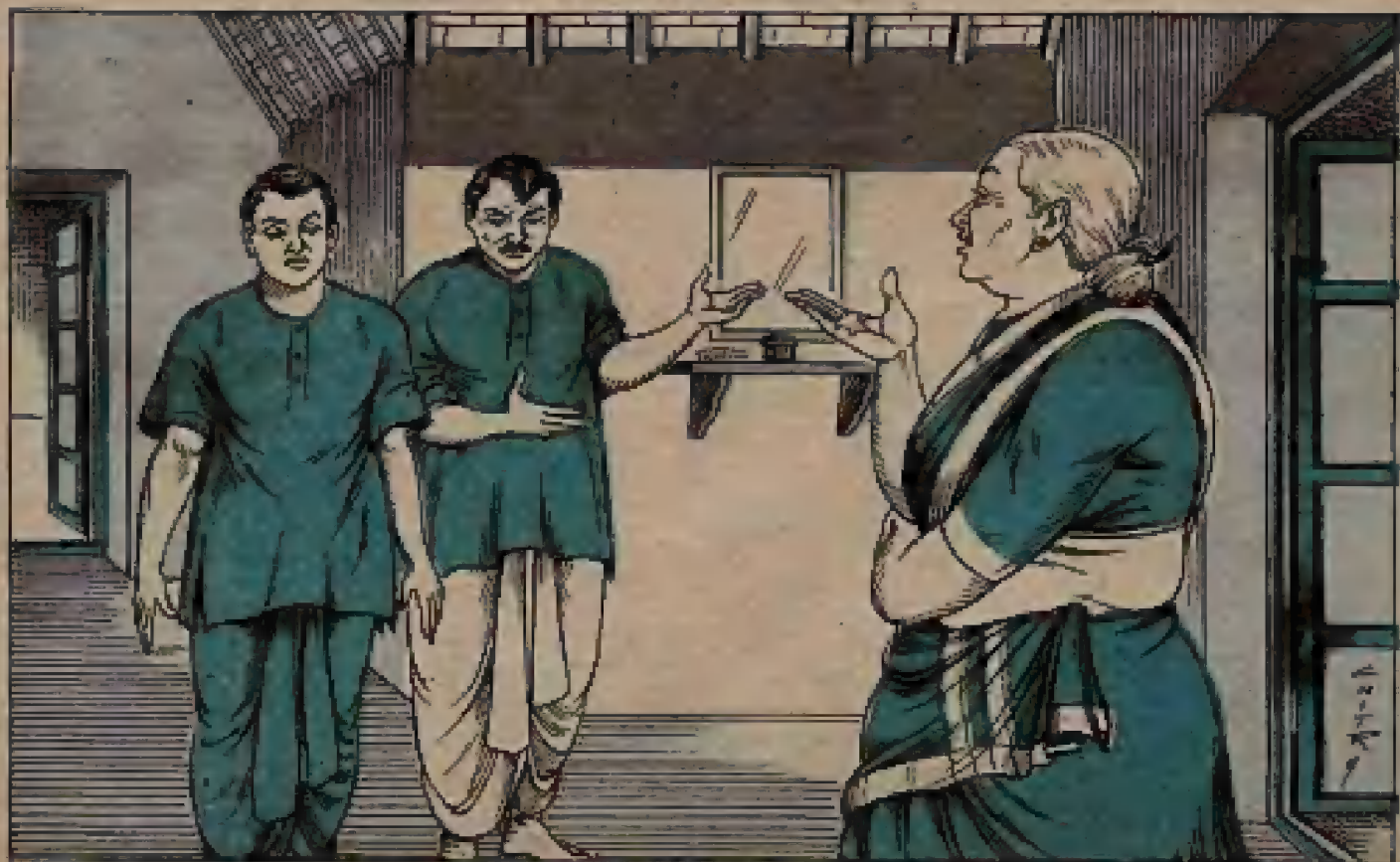
तीसरे दिन रात को तीनों साले अपने बहनोई के घर आकर ठहरे। तीसरा साला कमरे के किवाड़ के पास लेट गया। ठीक समय पर उस औरत को घर के अन्दर आते हुए चारों ने देख लिया। उसने पहले अपने हाथ सेंके। आलू खाकर दूध पी लिया। बच्चे को दूध पिलाकर सारा शरीर साफ़ किया। कपड़े बदले कर झूले में लिटाने के पहले दो-चार बार बच्चे को चूम लिया। तब उसे झूले में लिटा कर खड़ी रह गयी।

उस समय तीसरे ने कमरे से बाहर आकर अपनी बहन को पकड़ लिया। "मुझे छोड़ दो! मुझे छोड़ दो।" कहते वह झकझोरने लगी, मगर उसने अपनी बहन को नहीं छोड़ा। इस बीच में उसके भाई उसकी मदद के लिए आ पहुँचे और अपनी बहन को रोक लिया। "मुझे जाना होगा, वरना मुझे मार डालेंगे।" इस तरह चिल्ला कर वह बेहोश हो गयी।

दूसरे दिन सवेरे जब वह होश में आयी, तब उसने अपनी सारी कहानी सुनायी। उसका कहना था कि वह सचमुच मरी नहीं, उसकी मौत पिशाचों की कल्पना है। जब उसको दफ़नाया गया था, तब वह पिशाचों के अधीन हो गयी। जब तक वे पिशाच उस प्रांत में रहें, तब वह हर रोज़ अपने बच्चे को देखने आया करती, मगर जल्द ही पिशाच उसको साथ लेकर कहीं दूर प्रदेशों में जानेवाले थे। इसलिए वह आखिरी बार अपने बच्चे को देखने आयी और अपने भाइयों के हाथों में पड़ गयी, उस दिन अगर वे अपनी बहन को पकड़ न पाते तो वह फिर से कभी दिखाई न देती।

उसको पकड़ने वाले पिशाच शायद वापस चले गये होंगे। वह औरत इसके बाद अपने पति के साथ पहले की तरह गृहस्थी चलाने लगी। उसके नौ बच्चे हुए। मगर गाँव के लोग उन बच्चों के बारे में कहा करते थे–'मृत औरत के बच्चे हैं ये।'

शिलारथ

[८]

[गणलिंगेश्वर ने गाँव की कन्या को बाघ का आहार बनाना चाहा। खड्गवर्मा उस कन्या को डेरे में से बाहर लाया। बाद वह और जीवदत्त उस कन्या को साथ ले चल पड़े। गणलिंगेश्वर ने एक और कन्या को हड़प लाने के निमित्त अपने शिष्यों को यात्रा की तैयारी करने का आदेश दिया। बाद—]

गणलिंगेश्वर का आदेश पाकर सभी भैरव यात्रा के लिए तैयार हो गये। उसने अपने दल को निकट के एक पहाड़ की ओर बढ़ाया। उसका ख्याल था कि उस पहाड़ की तलहटी में कोई गाँव होगा, सूर्योदय तक वहाँ पहुँचने पर गाँव की कन्याएँ खेतों में काम करने के लिए निकल पड़ेंगी। उनमें से एक कन्या को चुराया जा सकता है।

भैरव दल के आगे दो-दो भैरव दोनों तरफ़ चलते, राजभट या गाँववालों से होनेवाले खतरे की सूचना देते रहते हैं। इस तरह जो दो भैरव आगे बढ़े, उनको एक पेड़ के नीचे सूर्योदय के समय एक युवक और एक कन्या दिखाई दी। युवक को तो उन लोगों ने कभी नहीं देखा था, मगर कन्या तो वही थी, जो एक रात को बाघ के साथ गायब हुई थी।

"यह तो कोई कामरूपी है! रात को बाघ के रूप में आकर इसने कन्या का अपहरण किया है।" एक भैरव ने कहा।

"ऐसे कामरूपियों को महाभक्त हमारे गुरु रुद्राक्षमालाओं के रूप में बदल कर अपने कंठ में धारण कर सकते हैं। चलो। हम जल्द यह खबर गुरुदेव को सुनायेंगे।" दूसरे भैरव ने कहा। दोनों भैरवों ने गुरु के निकट पहुँच कर सारा वृत्तांत उसे सुनाया। गर्णालिगेश्वर के आश्चर्य की कोई सीमा न थी। श्वेतभैरव की समझ में कुछ न आया। वह एक दम चकित रह गया।

"तुम लोग चुपचाप जाकर उनको घेर लो। कुछ लोग पेड़ों की डालों पर चढ़ जाओ। अगर वह कोई मांत्रिक है, तो ऊपर उड़ने से उसको पकड़ा जा सकता है।" गर्णालिगेश्वर ने अपने शिष्यों को समझाया।

सब भैरव उस युवक और कन्या के पास पहुँचे और चारों तरफ़ से उनको घेर लिया। तब सब लोग एक साथ उनकी ओर आगे बढ़े।

कुछ लोग निकट के पेड़ों पर चढ़कर उनके समीप के पेड़ों पर बंदरों की तरह उछल पड़े।

जंगल में बड़ी दूर तक यात्रा करने के कारण वह कन्या थक गयी थी, इसलिए वह पेड़ के तने से सट कर ऊँघ रही थी। उससे थोड़ी दूर पर जीवदत्त अपने दण्ड को दाढ़ी से टिकाकर बैठे कुछ सोच रहा था। वह यह सोच रहा था कि उस कन्या को अपने पिता के पास कैसे छोड़ दिया जाय। यही उसकी समस्या थी, पर खड्गवर्मा पास में न था। सूर्योदय के होते ही धनुष और बाण प्राप्त करने के विचार से वह चल पड़ा। उस दिन शायद उन्हें दुश्मनों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए दूर से ही दुश्मन का अंत करने के लिए वह धनुष और बाण तैयार करते एक झरने के किनारे बैठ गया। वह अपने काम में बिलकुल तल्लीन था।

जीवदत्त और गाँव के मुखिये की कन्या बेखबर बैठे थे, इसलिए भैरवों को उन्हें बन्दी बनाना बड़ा आसान हो गया। हठात् वे लोग पेड़ों की आड़ में से आये और उनको घेर लिया। कुछ और भैरव पेड़ों की डाल पकड़ कर झूलते चिल्ला उठे—"रात में बाघ के रूप में आये मांत्रिक! खबरदार! पक्षी की तरह तुम ऊपर उड़ने की चेष्टा करोगे तो तुम्हारे हाथ-पैर तोड़ डालेंगे।"

जीवदत्त अपना दण्ड लेकर उठने को हुआ, तभी चार-पांच भैरवों ने उसे कसकर पकड़ लिया। गाँव के मुखिये की कन्या ने भागने की कोशिश न की। वह निड़रता के साथ पेड़ से टिककर गणलिंगेश्वर की ओर एकटक देखती रह गयी।

गणलिंगेश्वर ने क्रोध से गरजते हुए उसके पास जाकर कहा—"बाल भैरवी! रात को बाघ के रूप में आकर क्या इसी ने तुम्हारा अपहरण किया?"

"ये बाघ के रूप में नहीं आये। इसी रूप में मुझे आपके डेरों के पास दिखाई दिये। मैं ही खुद उनके साथ अपने गाँव के लिए चल दी।" गाँव के मुखिये की कन्या ने उत्तर दिया।

"अरी पगली भैरवी! तुम समझती हो कि तुम्हारा गाँव अभी उसी जगह है? जंगली डाकुओं ने उस गाँव को लूटकर उसे जला डाला है। गाँव के सभी लोगों को मार डाला है। उस वक्त तुम गाँव के बाहर तालाब के पास थी और हमारे हाथों में पड़ गयी।" गणलिंगेश्वर ने कहा।

"मैं भैरवी नहीं हूँ! मेरा नाम भवानी है। मुझे और इनको छोड़कर तुम लोग अपने रास्ते चलते बनो।" मुखिये की कन्या ने क्रोध से कहा।

"यह जानकर ही हमने तुमको भैरविनी बनाना चाहा कि तुम्हारा नाम भवानी है।" यह शब्द कहकर गणलिंगेश्वर जीवदत्त की ओर घूम पड़ा, दांत किटकिटाते बोला—

"देखो, उन पहाड़ों पर हम भैरव-मंदिर बनाने जा रहे हैं। वहाँ पर तुम्हें इस युवक की बलि देनी होगी। मंदिर जब बनकर तैयार होगा, तब तुम उसकी पुजारिनी बनोगी, समझें!"

भैरव-भक्तों की वेष-भूषा और उनकी बातचीत पर जीवदत्त को घृणा होने लगी। मगर एक साथ अकेले इतने लोगों का सामना करने का प्रयत्न करना खतरे से खाली नहीं। वह सोचने लगा, शायद खड्गवर्मा दूर से ही यह सब देखकर हमें बचाने का प्रयत्न करता होगा।

जीवदत्त का सोचना सच ही निकला। खड्गवर्मा ने दूर से देखा कि जहाँ उसका मित्र है, वहाँ कोई हलचल हो रही है। सूर्योदय हो चुका था। खड्गवर्मा एक मजबूत धनुष और कई बाण तैयार करके उस ओर निकल पड़ा। तभी उसे लोगों की चिल्लाहटें सुनायी पड़ीं। इसका पता लगाने के लिए वह एक पेड़ पर चढ़ गया। जीवदत्त को घेरे हुए भैरव तथा गाँव के मुखिये की कन्या के साथ बातचीत करनेवाला गणलिंगेश्वर उसे साफ़ दिखाई दिये।

खड्गवर्मा ने सोचा कि उस वक़्त उन लोगों का सामना करने से उसी की हानि हो सकती है। उसने निश्चय कर लिया कि भैरव भक्त उसके मित्र तथा उस देहाती कन्या को जिस मार्ग से ले जाते हैं, उसका अनुसरण करे और मौक़ा मिलते ही उनका अंत करके अपने मित्र और उस कन्या को मुक्त करे।

गणलिंगेश्वर अपने शिष्यों के साथ पास के पहाड़ों की ओर चल पड़ा। दो भैरव त्रिशूल घुमाते सब के आगे चल रहे थे। खड्गवर्मा ने पेड़ पर से देखा और उनका अनुसरण करने का निर्णय किया।

थोड़ी देर बाद खड्गवर्मा पेड़ से उतर आया। भैरवों की आँख बचाकर उनके पीछे चलने लगा। थोड़ी दूर चलकर वह पहाड़ की तलहटी में पहुँचा। दो भैरव

पहाड़ पर चढ़ने लगे। उस प्रदेश में पेड़ बहुत कम थे। खड्गवर्मा को अब शिलाओं की ओट से छिपते जाने के सिवाय दूसरा कोई रास्ता न था। यह काम खतरे से खाली न था। भैरवों की आँखों में पड़ने की संभावना भी थी।

ये ही सारी बातें सोचते खड्गवर्मा पेड़ की आड़ में से बाहर आया, तभी चारों तरफ़ की झाड़ियों में से दस-बारह आदमी एक साथ बाहर आये और उसकी ओर भाले बढ़ाये। खड्गवर्मा ने पहचान लिया कि वे लोग उसी गाँव के हैं जिस गाँव को छोड़ वह चला आया है। उनमें दो पहरेदार भी थे। एक युवक एक पालतू भालू को पकड़े हुए था। वह भालू के साथ खड्गवर्मा के निकट पहुँचते हुए बोला—"तुम भागने की कोशिश करोगे तो मैं भालू को भड़का कर तुम्हारा सर नोचवा दूँगा।"

"अरे भाई, ऐसा मत करो! तुम लोग और हम सब इस वक़्त खतरे में फँसे हुए हैं। तुम्हारे गाँव के मुखिये और मुँशी कहाँ हैं?" खड्गवर्मा ने उस युवक से पूछा।

भालूवाला युवक जवाब देने ही वाला था कि तभी एक झाड़ी में से गाँव का मुखिया और मुँशी भी बाहर आये। खड्गवर्मा की ओर सहमी दृष्टि से देखते हुए बोला—"अरे तुम लोग देखते क्या हो? उसके हाथ से तलवार खींच लो।"

"मुखिया साहब, मेरे हाथ से तलवार छीन लेना वैसा सरल काम नहीं है। तुम लोग शोर मचाये बिना पहले मेरी बात तो सुन लो। मेरे मित्र और तुम्हारी बेटी को भैरवभक्त बन्दी बनाकर ले जा रहे हैं, लो, देखो। उस पहाड़ पर ले जा रहे हैं। तुम लोग अगर मेरी बात सुनोगे तो हम उन दोनों को बचा सकते हैं।" खड्गवर्मा ने समझाया।

"ओह, मेरी बेटी भवानी! कैसी क़िस्मत की बात है! क्या वह अभी जीवित

है? हम लोग उसकी खोज में निकल पड़े हैं। तुम मिल गये। क्या हम तुम्हारी बातों पर यक़ीन कर सकते हैं?" मुखिये ने पूछा।

"हमारे प्रदेश में सब कोई कहावत की तरह कहा-सुनते हैं कि खड्गवर्मा पर विश्वास करके किसी ने हानि नहीं उठायी! रात को भैरवों के गुरु ने तुम्हारी बेटी को बाघ का आहार बनाना चाहा तो मैंने और मेरे मित्र ने मिलकर उसकी रक्षा की और उसको इस प्रदेश में लाये। जब मैं बाहर गया था, तब भैरवभक्त उन दोनों को पकड़ ले गये हैं। बस, यही बात है! मैंने उनको छुड़ाने का उपाय सोच रखा है। मेरे साथ चलो।" खड्गवर्मा ने कहा।

खड्गवर्मा की बातों पर मुखिये का विश्वास जम गया। वह खड्गवर्मा के पास गया। पर मुंशी उसकी ओर शंका भरी दृष्टि से देखते हुए बोला—"हम तुम पर विश्वास कैसे करें? तुमने उस दिन रात को हमारे गाँव पर हाथी और बाघ को जो खदेड़ दिया? लगता है कि तुम मंत्र-तंत्र जाननेवाले हो!"

"इन बेकार की बातों से वक़्त बरबाद न करके मेरी बात सुनो और मेरे पीछे चलो। लो, देखो, वे सब भैरव पहाड़ पर

चढ़ रहे हैं। मेरे मित्र और तुम्हारी कन्या भी दिखाई दे रहे हैं न?" खड्गवर्मा ने गुस्से में आकर कहा।

मुखिये तथा उसके अनुचरों ने पहाड़ की ओर देखा। मुखिये ने अपनी पुत्री को देख आवेश में आकर कहा—"चलो, उन दुष्टों को पकड़कर पेड़ों से बाँध देंगे और भालों से नोच-नोचकर मरवा डालेंगे।" इन शब्दों के साथ मुखिया आगे बढ़ा।

खड्गवर्मा ने उसका कंधा पकड़कर रोकते हुए कहा—"वे बदमाश खाली हाथ नहीं हैं। उनके हाथों में त्रिशूल चमक रहे हैं। मेरे पीछे चलो। शिलाओं की ओट में से चलकर मौक़ा मिलते ही उन

पर हमला कर बैठेंगे।" खड्गवर्मा ने सलाह दी।

खड्गवर्मा के कहे मुताबिक़ मुखिया और उसके अनुचर दूसरे रास्ते से पहाड़ पर चढ़ने लगे। थोड़ी देर बाद भैरवों का दल पहाड़ के एक समतल प्रदेश पर आ पहुँचा। उनके गुरु गणलिंगेश्वर ने सबको रोका, तब चारों तरफ़ एक बार दृष्टि प्रसारित कहा-"यह प्रदेश भैरव मंदिर बनाने के लिए बड़ा ही अनुकूल लगता है। इस शिला पर पहले हमारे इस बंदी की बलि देंगे, तब मंदिर का निर्माण शुरू करेंगे। कन्या भैरवी इस तलवार से इसके कलेजे को फाड़ कर रक्त का तर्पण करेगी।" इन शब्दों के साथ वह एक छुरी भवानी के हाथ में देने लगा।

भवानी ने रौद्र रूप धारण किया। गणलिंगेश्वर के हाथ की छुरी को हटाकर कहा-"दुष्ट कहीं का! तुम मुझे समझते ही क्या हो? मेरे हाथों से हत्या कराना चाहते हो? खबरदार! मुझे और इनको यहीं पर छोड़ अपने रास्ते चलते बनो, वरना कभी न कभी में इसी छुरी से तुम्हारा कलेजा फाड़ डालूंगी।"

"ओह, यह कन्या पौरुष रखती है। यह भैरवी का काम दे सकती है! अब तो मुहूर्त बीतता जा रहा है, मैं ही इस बन्दी का कलेजा फाड़कर भैरवमंदिर के इस प्रदेश को पवित्र बनाता हूँ।" गणलिंगेश्वर ने कहा।

इसके बाद वह अपनी मुट्ठी में छुरी को कसकर पकड़ा। हाथ उठाकर ऊँचे स्वर में कोई मंत्र पढ़ने लगा। शिलाओं की आड़ में से यह सब देखनेवाला खड्गवर्मा भालूवाले युवक से बोला-"तुम अपने पालतू भालू को उस दाढ़ीवाले के ऊपर भड़का दो।"

देहाती युवक ने भालू को गणलिंगेश्वर को दिखाते कहा-"जांबवान, उस पर कूद पड़ो और उसका सर चबाओ।"

दूसरे ही क्षण भालू गुर्राते गणलिंगेश्वर के दल पर झपट पड़ा। (और है)

तीन खतरे

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, तुम्हारा साहस प्रशंसनीय है। मगर बड़े से बड़ा साहसी भी क़िस्मत पर विजय नहीं पा सकता। इसके उदाहरण के स्वरूप में तुमको सुमंत की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: शोण नदी के तट पर स्थित शोणपुर पर शांतिवर्मा शासन करता था। उसके पुत्र का नाम सुमंत है। शांतिवर्मा ने यह सोचकर प्रसन्नता के साथ कई दिनों तक उत्सव मनाया कि उसके बाद राज्य करने के लिए एक पुत्र पैदा हुआ है। उस उत्सव में भाग लेने के लिए आये हुए ज्योतिषियों ने सुमंत

वेताल कथाएँ
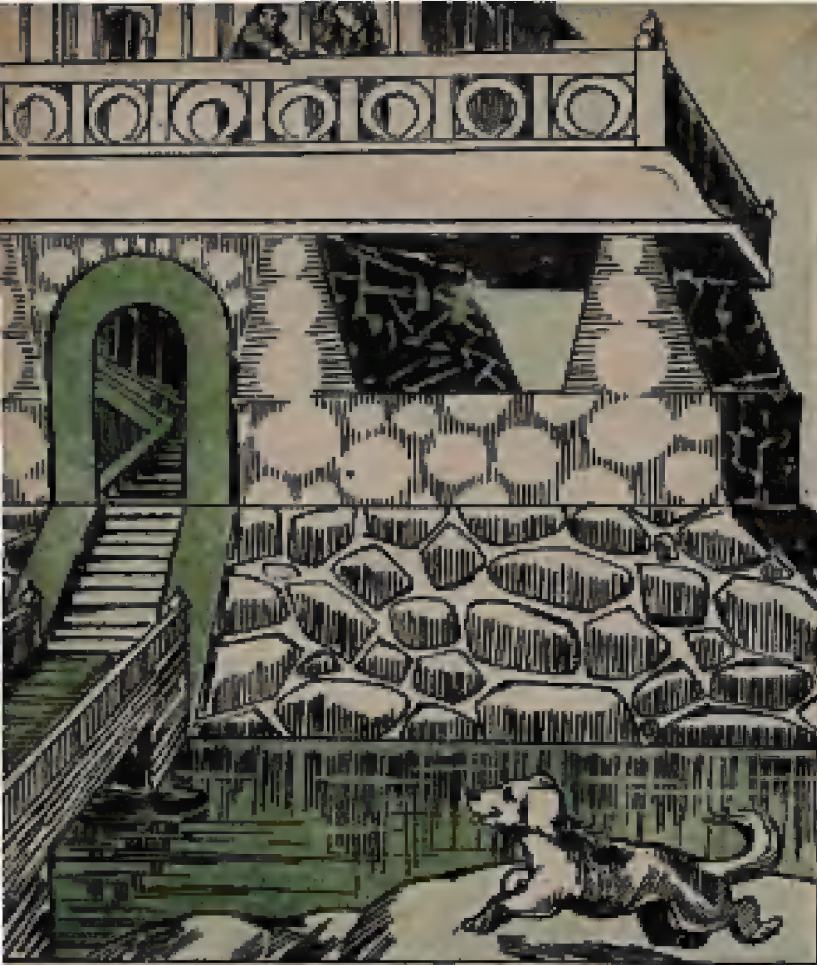
की जन्मकुण्डली देखी, तो वे बड़े ही निराश हो गये।

राजा ने ज्योतिषियों की ओर देख घबराकर पूछा—"क्या राजकुमार की जन्मकुण्डली में कोई अनहोनी बात है?"

"राजकुमार को मगर-मच्छ, साँप या कुत्ते के द्वारा खतरा है।" ज्योतिषियों ने जवाब दिया। राजा एकदम घबरा गया, पर निराश न होकर मगर-मच्छ, साँप और कुत्तों से राजकुमार को दूर रखने के कई उपाय सोचे। आखिर उसने नगर के बीच में स्थित एक टीले पर एक महल बनवाया। राजकुमार की रक्षा के लिए राजा ने पहरेदारों को नियुक्त किया, सेवा के लिए दास और दासियों का इंतज़ाम किया। टीले के नीचे चारों तरफ़ खाई बनवाकर उस पर एक पुल भी बंधवाया।

एक दिन सुमंत छत पर खेल रहा था। उसने नीचे झांककर देखा तो उसे खाई के उस पार एक पिल्ला दौड़ते दिखाई पड़ा। सुमंत ने तब तक कुत्ते को न देखा था। इसलिए राजकुमार ने उस पिल्ले को देख सेवक से पूछा—"वह दौड़नेवाला प्राणी क्या है?"

"राजकुमार! वह कुत्ते का पिल्ला है।" सेवक ने जवाब दिया।

"तुम उसे पकड़ लाओ। मैं भी उसके साथ दौड़ूँगा, खेलूँगा।" सुमंत ने कहा।

सेवक ने राजा से यह बात कही।

"अब करेंगे क्या? पिल्ले को लाकर राजकुमार को दो, वरना वह हठ करके खाना छोड़ देगा!" राजा ने आदेश दिया।

सेवक ने पिल्ले को पकड़ लाकर राजकुमार को दिया। सुमंत उसके साथ खेलते बड़ा खुश रहने लगा। कई साल बीत गये। अब सुमंत बड़ा हो गया था। उसने अनेक बातें समझ ली थीं। उसने एक दिन अपने पिता के पास यह खबर भेजी—"पिताजी, मैं इस टीलेवाले महल में नहीं रह सकता। यहाँ पर मेरी जिंदगी

झांकी मालूम होती है। मैं जानता हूँ कि बाहर जाने पर मेरी जान के खतरे हैं। इस तरह जीने के बदले मरना ही बेहतर है। आप मुझे हथियार दिला दे तो मैं अपने कुत्ते को साथ ले देशाटन पर जाऊँगा।"

राजा ने विरोध नहीं किया। राजा के द्वारा भेजी गयी नाव पर सवार हो सुमंत और उसका कुत्ता नदी के उस पार पहुँचे। वहाँ पर राजकुमार के लिए एक काला घोड़ा तैयार था। सुमंत उस पर सवार हो अपनी नयी ज़िंदगी की खोज में चल पड़ा।

कई दिन यात्रा करके राजकुमार एक राज्य में पहुँचा। उस देश का राजा बड़ा विचित्र आदमी था। वह हमेशा नई नई समस्याओं और परीक्षाओं के बारे में सोचा करता था। उसके इकलौती बेटी थी। उसका नाम सीमंतिनी था। सीमंतिनी बड़ी सुंदर थी। वह विवाह के योग्य हो गयी थी। तब राजा ने वर के वास्ते एक परीक्षा का आयोजन किया।

राजा ने सत्तर फुट ऊँचाई तक चट्टानों से दीवारें बनायीं और उस ऊँचाई पर एक मकान बनवाया। उसमें राजकुमारी को रखा। तब यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो व्यक्ति दीवारें लांघकर राजकुमारी के पास पहुँचेगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जायगा। सीमंतिनी के सौंदर्य का समाचार चारों तरफ़ फैल गया था, इसलिए अनेक राजकुमार उसके साथ विवाह करने के विचार से आ पहुँचे। उन सबके ठहरने व भोजन का राज्य की तरफ़ से अच्छा प्रबंध किया गया।

उसमें ठहरे राजकुमारों ने जब सुमंत को घोड़े से उतरते देखा, तो सोचा कि वह भी उन लोगों की तरह प्रतियोगिता में भाग लेने आया है। सबने उसका स्वागत किया।

सुमंत ने स्नान करके थोड़ी देर आराम किया। तब अन्य राजकुमारों ने उससे पूछा—"तुम किस राज्य से आ रहे हो? तुम्हारे पिता का क्या नाम है?"

सुमंत ने उन लोगों से सच्ची बात न बतायी। उसने यही बताया कि उसका पिता एक राजा के पास घुड़ साज है। वह अपनी सौतली माँ की यातनाओं से ऊब कर देशाटन कर रहा है।

इसके बाद सुमंत ने उन लोगों से पूछा–"तुम सब लोग यहाँ पर क्यों आये हो?" राजकुमारों ने राजकुमारी के वास्ते होनेवाली परीक्षा का समाचार सुनाया। कई दिनों से राजकुमार उन पत्थरों की दीवारों पर चढ़कर राजकुमारी के पास पहुँचने का प्रयत्न कर रहे थे, पर कोई भी सफल न हुआ था।

सुमंत ने भी उन लोगों के साथ दीवार पर चढ़ने का प्रयत्न करना चाहा। उसने उन राजकुमारों के साथ जाकर देखा कि उनके प्रयत्न कैसे असफल हो रहे हैं। उसने ध्यान से देखा कि पत्थर की दीवार में हाथ और पैर जमाने के लिए कोई सुविधा तो नहीं। सब लोग दीवार के निचले भागों के आधारों पर ही ध्यान दे रहे थे पर थोड़ी ऊँचाई तक मेहनत उठाकर चढ़ जाय तो बाकी दीवार पर चढ़ने की बड़ी सुविधा एक दूसरी जगह थी। सुमंत ने उस जगह से दीवार पर चढ़ना शुरू किया और देखते-देखते वह राजकुमारीवाले कमरे तक पहुँच गया।

इसे देखकर एक राजकुमार राजा के पास दौड़ गया और बोला–"राजन, एक युवक आपकी परीक्षा में सफल हुआ और उसने राजकुमारी को जीत लिया है।"

"वह किस देश का राजकुमार है?" राजा ने पूछा।

"वह राजकुमार नहीं, उसके देश के घुड़साज का पुत्र है। कहता है कि उसका देश नदी के उस पार है। वह अपनी सौतेली माँ से डर कर देशाटन कर रहा है।" उस राजकुमार ने बताया।

यह बात सुनते ही राजा को बड़ा क्रोध आया और बोला–"ऐसा कभी नहीं हो

सकता, तुरंत उसे भेज दो। एक यात्री को मैं अपनी लड़की कैसे दे सकता हूँ? जो राजकुमार न था, उसने इस प्रतियोगिता में कैसे भाग लिया?"

राजकुमार डर गया, उसने अपने साथियों के पास लौट कर राजा की ये बातें सुनायीं। राजकुमारी ने ये बातें सुनकर नीचे खड़े राजकुमारों से कहा–"आप लोग जाकर मेरे पिताजी से कह दीजिये। यदि इस युवक को मुझ से अलग किया तो मैं अन्न-जल त्याग दूंगी।"

यह बात सुनकर राजा और नाराज हो उठा। उसने प्रतियोगिता में विजयी हुए युवक को मार डालने का अपने सिपाहियों को आदेश दिया।

"यदि इस युवक पर तुम लोगों ने वार किया तो मैं खिड़की में से कूद कर जान दे दूंगी।" सीमंतिनी ने कहा। राजभट चुपचाप वापस लौट गये।

राजा तो आश्चर्य चकित हो गया। उसने राजकुमारी तथा विजयी हुए युवक को अपने पास बुलवा लिया। उस युवक को देखने पर राजा ने सोचा कि यह जरूर कोई राजकुमार ही होगा। फिर भी राजा ने उससे पूछा–"तुम कौन हो?" सुमंत ने राजा को वे ही बातें बतायीं जो उसने पहले राजकुमारों से कही थीं। फिर भी राजा ने शांत होकर उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन सुमंत ने अपनी पत्नी से कहा–"मगर-मच्छ, सांप या कुत्ते के द्वारा मेरी जान को खतरा है।"

"ऐसी बात हो तो उस कमबख्त कुत्ते को साथ लेकर घूमते क्यों हैं? उसे मार डालिये।" सीमंतिनी ने समझाया।

"यह कुत्ता बचपन से ही मेरे साथ खेलता आया है। मैं इसे कैसे मार सकता हूं?" सुमंत ने जवाब दिया।

"ऐसी बात हो तो आप जहाँ भी जायेंगे, अपने साथ तलवार और एक रक्षक लेते जाइये।" सीमंतिनी सलाह दी।

कुछ और महीने बीत गये। सुमंत को मालूम हुआ कि उसका पिता बीमार है और उसके इकलौते बेटे को देखने के लिए तड़प रहा है। अपने पिता को एक बार देख आने का समाचार सुमंतिती को सुनाया और कुछ भटों को साथ ले अपने देश की ओर चल पड़ा। आधे रास्ते में पहुँचने पर उसे खबर मिली कि उसका पिता अब तब में है। सुमंत ने सोचा कि ऐसी हालत में अपने नगर में पहुँचने पर वह शीघ्र लौट नहीं सकता है, यह सोचकर उसने एक नदी के किनारे पड़ाव डाला और सुमंतिनी को बुला लाने के लिए एक विश्वास पात्र सिपाही को भेजा।

उस रात को सुमंत जब अपने डेरे में सो रहा था, उस वक़्त एक मगर-मच्छ नदी से रेंगते आया। पहरेदार उसे देख चिल्ला पड़ा, तब चार-पाँच सिपाहियों ने आकर उसे मार डाला।

सीमंतिनी के आने में काफ़ी समय लगा। तब तक सुमंत को उसका इंतज़ार करना पड़ा। वह जिस प्रदेश में ठहरा था, वहाँ पर मगर-मच्छों का उपद्रव था। इसलिए सुमंत बड़ी सावधानी से अपने दिन काटने लगा।

आखिर एक दिन शाम को सीमंतिनी वहाँ आ पहुँची। दूसरे दिन यात्रा करने के लिए सुमंत ने निश्चय किया। मगर उस रात को सीमंतिनी जागती ही रह

गयी। वह यह सुनकर घबरा गयी कि उसका पति मगर-मच्छ के खतरे से मरते-मरते बच गया है।

सीमंतिनी को उस दिन रात को जागना अच्छा ही हुआ। आधी रात के वक्त उसने एक सांप को डेरे में रेंगते आते हुए देख लिया। उसकी समझ में न आया कि क्या करना चाहिये। एक कोने में बड़े पात्र में दूध भरे थे। सुमंतिनी ने उस पात्र को सांप के रास्ते में लाकर रख दिया। सांप ने दूध की गंध ली। वह जल्दी-जल्दी दूध पीने लगा। सारा दूध पी जाने पर वह वहाँ से हिल न सका। तब सीमंतिनी ने अपनी पति की तलवार लाकर एक ही वार में उसके दो टुकड़े कर दिये।

इसके बाद वे लोग शोणपुर पहुँचे। तब तक शांतिवर्मा मर चुका था। सुमंत ने अपने पिता की अंतिम क्रियाएँ करके राज्याभिषेक कर लिया।

दिन सुख के साथ बीतने लगे। सुमंत अपने कुत्ते को साथ ले अकसर नदी के किनारे शिकार खेलने जाया करते थे। पर सीमंतिनी भी सदा उसके साथ चली जाती।

एक दिन सुमंत नदी के किनारे चिड़ियों को मार रहा था। एक झाड़ी में से अचानक एक जंगली बतख बाहर आ पहुँचा। उसे पकड़ने के लिए कुत्ता उस पर झपट पड़ा और अपने मालिक के पैरों के बीच फँस गया। सुमंत धक्का खाकर कुत्ते के साथ नदी में गिर पड़ा। वह जहाँ गिरा था, वहाँ दल दल थी जिसमें फँसकर सुमंत चिल्लाने लगा। सीमंतिनी चिल्लाहट सुनकर दौड़ आयी और अपनी शाल निकाल कर सुमंत की ओर फेंका। उसकी मदद से सुमंत दलदल से बाहर आया। मगर कुत्ते का पता न चला।

इस घटना के बाद ज्योतिषियों ने बताया कि सुमंत तीनों खतरों से गुज़र गया है और उसे अब अपनी जान का डर नहीं है।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, मेरे अनेक संदेह हैं। राजा ने अपने पुत्र को खतरों से बचाने के लिए अनेक प्रयत्न किये, ऐसी हालत में शांतिवर्मा ने सुमंत को क्यों कुत्ते का पिल्ला मंगवा कर दिया? उसको देशाटन पर क्यों जाने दिया? सुमंत ने अपने ससुर से सच्ची बात न बताकर झूठ क्यों कहा? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया–"इस प्रकृति में सब के लिए मृत्यु निश्चित है। जिंदगी में प्रत्येक व्यक्ति कई बार खतरों से गुजरता है और बच जाता है। अलावा इसके मृत्यु किसी न किसी रूप में सब पर आक्रमण करती है। उससे बचने के लिए जिंदगी को नीरस बनाना मूर्खता होगी। मगर शांतिवर्मा ने अपने पुत्र को मृत्यु से बचाने के लिए उसको कृत्रिम वातावरण में रखा। पर उसके पुत्र के आनंद को दूर करना उसका उद्देश्य न था। यदि ऐसी बात होती तो वह स्वयं पिल्ला मंगवाकर उसे न देता? मगर जब उसने मांगा तब राजा ने इनकार नहीं किया। अगर उस कुत्ते के द्वारा सुमंत को कोई खतरा होता तो उसकी जिम्मेदारी राजा की नहीं। इसी प्रकार सुमंत ने जब नयी जिंदगी की खोज में देशाटन पर जाना चाहा, तब राजा ने मना नहीं किया। ज्योतिषियों ने जो खतरे बताये, उनको दूर करनेवाली सीमंतिनी ही है। यह बात सहज भी है। क्यों कि उसने सुमंत की जिंदगी को बांट लिया है। अब रही, सुमंत के झूठ बोलने की बात! यदि वह यह बताये कि वह अमुक देश का राजकुमार है, तब उसका ससुर उसके वंश का पता लगायगा और उसके खतरों की बात जान लेगा। इससे नाहक परेशानी के सिवा कुछ हाथ नहीं लगता।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सराफ़

पोलैण्ड के निवासियों का यह विश्वास था कि उस देश की खानों में मनुष्य जैसे भूत होते हैं । उन भूतों को वे लोग 'सराफ़' नाम से पुकारा करते थे ।

ये सराफ़ कभी भूगर्भ से बाहर न आते थे, बल्कि खनकों के साथ मिलकर काम करते थे । तक़लीफ़ों में उनकी मदद करते थे । ये सराफ़ मामूली आदमियों से छोटे होते थे । जो खनक स्वभाव से अच्छे होते थे, सराफ़ उनकी कई तरह से मदद करते थे । जहाँ पर लोहे की मिट्टी कम होती थी, वहाँ पर काम करनेवालों को अच्छी खान दिखाते थे ।

एक नमक की खान में एक मिस्त्री था । उस खान में काम करनेवाला एक मज़दूर मर गया तो उसकी पत्नी को हर्जाना देने से मिस्त्री ने इसलिए इनकार किया कि वह औरत मरे हुए मजदूर की पत्नी है, इसका सबूत उसे नहीं मिला । अन्य मज़दूरों ने गवाही दी कि वह औरत उस मरे हुए मजदूर की पत्नी है । मगर मिस्त्री ने उनकी बातों की परवाह न की । इसके एक हफ़्ते बाद मिस्त्री एक सुरंग से होकर चल रहा था तो अचानक ऊपर की छत गिर पड़ी और वह दबकर मर गया ।

कहा जाता है कि लड़ाई के समय अमीर लोग अपनी संपत्ति को इन्हीं नमक की खानों में छिपा देते थे । ऐसी बहुत सारी संपत्ति उन खानों में ही रह गयी है । यह भी कहा जाता है कि वह सारी संपत्ति इन्हीं सराफ़ों के अधीन में है । उस संपत्ति को खोज निकालने का कई लोगों ने प्रयत्न किया, मगर खोजते समय अचानक उनके हाथों के मशाल बुझ जाते थे ।

एक बार एक सराफ़ ने दो खनकों को उस संपत्ति को दिखाने का आश्वासन

पोलैण्ड की लोक-कथा

दिया। सराफ़ के साथ चलते समय एक खनक एक लकड़ी को चीरते उसके टुकड़ों को रास्ते में गिराता गया। उसका विश्वास था कि उनकी मदद से रास्ते का पता लगाया जा सकता है। उन दोनों खनकों ने संपत्ति को देखा। मगर लौटते समय देखते क्या हैं, लकड़ी के वे टुकड़े गायब हैं। दूसरे ने लौटते समय दीवारों पर निशाने बनाये, मगर वे भी गायब हो गये। इसलिए वे खनक उस संपत्ति को प्रयत्न करके भी देख न पाये।

पोलैण्ड भर में एक बहुत बड़ी पुरानी खान थी। उसमें सराफ़ अधिक संख्या में रहा करते थे। उस खान को उन सराफ़ों ने कई भागों में बांटा और एक एक भाग की एक सराफ़ देख-भाल करता था। उस भाग में काम करनेवालों पर वह सराफ़ निगरानी रखता था। खनकों का विश्वास था कि उनके प्रति यदि कोई अन्याय हो जाय तो सराफ़ उनके प्रति न्याय करेगा।

एक गरीब मजदूर था जो ज्यादा काम न करता था, बल्कि दिन भर शराब पीकर नशे में रहता था। उसे अच्छी खान में काम दिया नहीं जाता था। एक दिन वह सुबह से काफ़ी मेहनत करने पर भी उसे लोहे का एक टुकड़ा तक न मिला। वह एक चट्टान पर बैठे दुखी होने लगा—"मैं भी कैसा दरिद्र हूँ। मुझे किसी की भी मदद नहीं मिलती। मेहनत करूँ तो क्या फ़ायदा?"

एक सराफ़ ने उसके पास जाकर पूछा—"तुमको क्या यही जगह काम करने को दी गयी है?"

"इससे अच्छी जगह मुझे कौन देगा?" खनक ने विनय से कहा।

"मेरे साथ चलो, तुमको चाँदी मिलने वाली जगह दिखा देता हूँ। मेरे कहे मुताबिक़ करोगे तो तुम जल्द अमीर बन जाओगे।" सराफ़ ने जवाब दिया।

खनक सराफ़ के साथ चला गया। सराफ़ ने एक जगह दिखाते हुए कहा—"लो

चाँदी, तुम जितना चाहते हो, खोदकर ले लो। तुम जो चाँदी खोदते हो, उसमें अपनी मजदूरी भर की चाँदी तौलवा कर ले लो। बाद जहाँ हम पहले मिले थे, वहाँ पर हम बांट लेंगे।"

खनक खुशी के साथ अन्य मजदूरों के पास गया और बोला–"भाइयो, एक जगह काफ़ी कच्ची चाँदी है। तुम लोग खोदने के लिए चले आओ।"

"यहाँ की खान में जस्ते के सिवा कुछ नहीं है। चाँदी तो कभी की सूख गयी है। तुमको यक़ीन हो तो तुम्हीं सारी चाँदी खोद कर ले लो।" मजदूरों ने सोचा कि वह शराब के नशे में बक रहा है।

लेकिन उस मजदूर ने शराब पीना छोड़ दिया और एक महीने भर कच्ची चाँदी खोदकर अपनी मजूरी मद्दे कई हज़ार चाँदी के सिक्के कमाये। उन सिक्कों को एक ठेले में डालकर सराफ़ से जा मिला। सराफ़ उस मजदूर के इंतज़ार में बैठा था।

सिक्कों को बराबर बांटने पर एक सिक्का बच रहा। "यह बचा हुआ सिक्का कौन ले?" सराफ़ ने पूछा।

"तुम्हीं ले लो, साहब!" मजदूर ने जवाब दिया।

"तुमको पैसों का लोभ छू तक नहीं गया है, तुम्हीं रख लो। मगर दान करना न भूलो। आइंदा कभी खान में न आना।" सराफ़ चेतावनी दे चला गया।

मजदूर ने शराब पीना छोड़ दिया और जिंदगी-भर दान करते सुखपूर्वक अपने दिन काटने लगा।

उसी खान में इससे भी बढ़कर एक विचित्र बात हुई है। यह भी एक मजदूर पर ही। एक दिन एक मजदूर के पास जाकर सराफ़ ने पूछा–"तुम अकेले काम क्यों करते हो? क्या मुझे भी अपना साझेदार बनाओगे?"

इस पर मजदूर ने जवाब दिया–"इस खान में लोहा बहुत कम है जिससे एक

आदमी का भी पेट नहीं भरता। दोनों बांट ले तो खायेंगे क्या?"

"मैं तुमको अच्छी जगह दिखा देता हूँ। मेरे साथ चलो।" ये शब्द कहते सराफ़ मजदूर को अपने साथ ले गया। एक जगह कच्चा लोहा काफ़ी मात्रा में था। मजदूर ने बड़े ही उत्साह के साथ उसे खोदना शुरू किया। थोड़ी देर बाद सराफ़ ने उसे रोका और तंग सुरंग के जरिये उसे और गहराई तक ले गया।

वे दोनों काफ़ी गहराई तक उतर पड़े। मजदूर थक गया। उसने कहा, 'मैं थोड़ी देर आराम करना चाहता हूँ।' इसके बाद अपनी थैली से रोटी निकाल कर खाया और सो गया।

मजदूर ने जागकर देखा तो सराफ़ वहीं पर दिखाई दिया। सराफ़ ने मजदूर से पूछा–"जानते हो, तुम कितनी देर सोये?"

"शायद दो घंटे सोया हूँगा।" मजदूर ने जवाब दिया।

सराफ़ कुछ न बोला। उसे दूसरे रास्ते से उस जगह ले गया, जहाँ पर पहले वे मिले थे। तब उसके हाथ एक सिक्का देकर बोला–"शहर में जाकर रोटी खरीद लाओ।"

मजदूर जब सुरंग से ज़मीन पर आया, तब वहाँ काम करनेवाली चार औरतें उसे देख घबरा गयीं और अपना काम छोड़ भाग गयीं। मजदूर उनको कोसते हुए शहर में गया। पर वह उस शहर को पहचान न पाया। आखिर यहाँ तक कि वह अपना घर भी पहचान न पाया। उसने एक दूकान में जाकर सिक्का दे पूछा–"मुझे रोटी दो।" दूकानदार ने कहा–"यह सिक्का नहीं चलने का।" दूकान के पास एक पढ़ा-लिखा आदमी बैठा था, उसने सिक्के की जाँच करके बताया कि यह सिक्का सौ साल पुराना है।

मजदूर की समझ में आया कि वह सौ साल सो गया होगा। उसने खान में लौट

जाकर सराफ़ से बताया–"मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं सौ साल सो गया हूँ। अब मेरी हालत क्या होगी?"

"यह सब ऐसा नहीं, तुम सीधे शहर में जाओ। तुम ज्यादा से ज्यादा दो साल सो गये होगे! याद रखो और ठीक एक साल बाद तुम फिर मुझसे मिलो। मैं यहीं रहूँगा।" सराफ़ ने मजदूर के हाथ थोड़ा सोना देते हुए समझाया।

इस बार मजदूर सीधे अपना घर जा सका। मगर जब उसने अपने अनुभव बताये, तब उन पर उसकी पत्नी, बच्चे और मित्रों ने भी यक़ीन नहीं किया।

एक साल बाद वह मजदूर फिर खान में उतर पड़ा और सराफ़ से मिला।

"इस बार तुमको मैं खजाना दिखा देता हूँ। मेरे साथ चलो।" इन शब्दों के साथ सराफ़ मजदूर को अपने साथ ले गया। वे दोनों एक सुरंग से होते हुए बहुत दूर गये। आखिर वे जहाँ पहुँचे, वहाँ पर एक बहुत बड़ा खजाना था।

"यह प्रदेश एक समय जमीन के नजदीक़ था। मजदूर बड़ी आसानी से खोदकर ले लेते थे। मगर इतनी सरलता से जो धन मिलता था, उससे बहुत घमण्डी हो गये। इसलिए उनकी सजा के रूप में यह सारा खजाना भूगर्भ में धँस गया। तुम जितना ले जा सकते हो, ले जाओ और आराम से अपने दिन बिताओ।" सराफ़ ने बताया।

"क्या मैं इस खजाने के बारे में अपने मित्रों को बता सकता हूँ?" मजदूर ने सराफ़ से पूछा।

"तुम बताना चाहो तो बताओ। यह भी बताओ कि कुदाल और फावड़े ले जाकर खोद ले जाये!" सराफ़ ने जवाब दिया।

मजदूर बहुत बड़ा अमीर बन गया। मगर जब उसने यह कहानी लोगों को सुनायी तो किसीने यक़ीन नहीं किया। इसके बाद कोई भी उस खजाने का पता न लगा पाया।
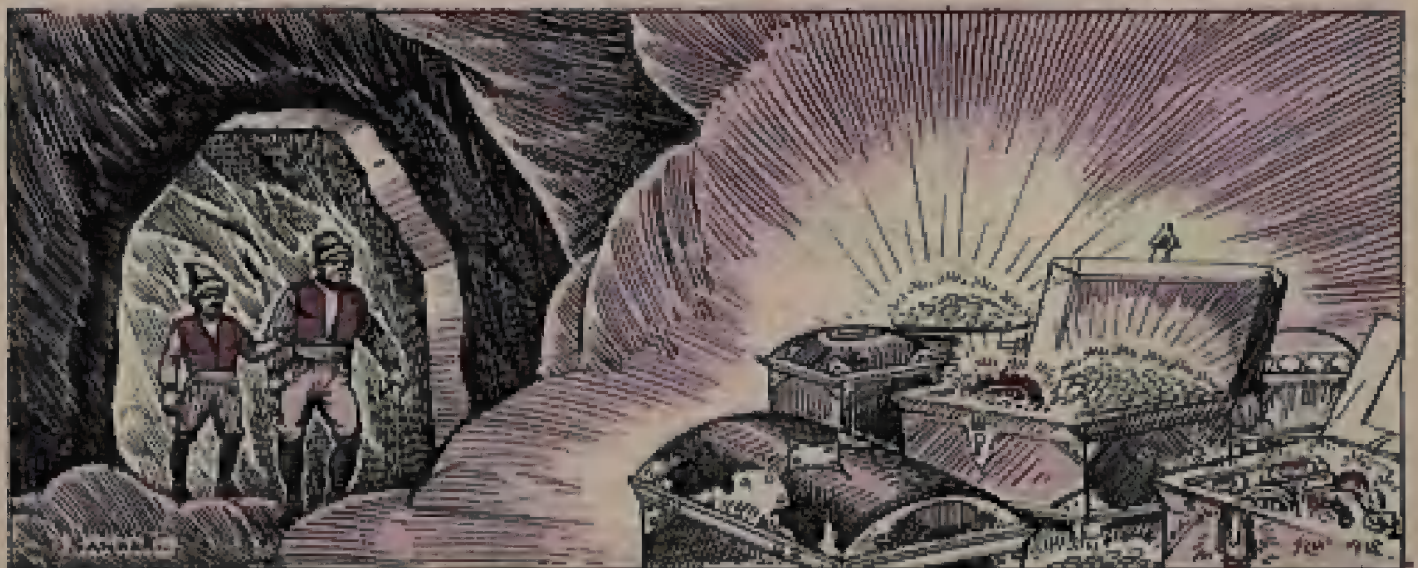
इमली का पागलपन

रमाशंकर ने कुएँ के पास नहाते हुए इमली के पौधे को देखा। उसने अपनी औरत को बुलाकर कहा–"अरी लक्ष्मी, यहाँ पर इमली का पौधा उग आया है। यह पौधा जब बड़ा होगा और उसमें इमली के फल लगेंगे तो क्या करेंगे?"

"इमली बेचकर गाय खरीदेंगे।" लक्ष्मी ने झट जवाब दिया।

"तुम कुम्हार के घर जाकर दूध के लिए एक बर्तन, घी के लिए एक, और मक्खन के लिए एक बर्तन ले आओ। सुनो, दूध दुहने के लिए एक बड़ा पुरवा भी लेते आना।" रमाशंकर ने कहा। लक्ष्मी कुम्हार के घर से चार बर्तन और एक बड़ा पुरवा ले आयी।

"अरी, तुम एक बर्तन ज्यादा क्यों लायी?" रमाशंकर ने पूछा।

"मेरी माँ को घी बहुत पसंद है। उसको घी भेजने के लिए एक और बर्तन लायी हूँ।" लक्ष्मी ने जवाब दिया।

"अरी, हमें ही घी काफ़ी नहीं पड़ता तो अपने मायके को भेज दोगी?" यह कहते रमाशंकर ने अपनी पत्नी को पीटा।

यह हो-हल्ला देख रास्ते चलने वाले सब जमा हो गये। एक बुजुर्ग ने रमाशंकर से पूछा–"अबे, तुम अपनी औरत को क्यों पीटते हो?" रमाशंकर ने सारा क़िस्सा सुनाया। इस पर वह बुजुर्ग एक लाठी लेकर रमाशंकर को पीटने लगा।

"तुम मुझे क्यों पीटते हो?" रमाशंकर ने पूछा।

"तुम्हारी गाय मेरे खेत में घुस कर चरती है तो क्या करूँ?" बुजुर्ग ने जवाब दिया। इस पर सब लोग ठठाकर हँस पड़े। रमाशंकर लज्जित हो उठा।

—रामनिवास

बगुला और खलीफ़ा

बग्दाद का शासक खलीफ़ा एक दिन दुपहर को आराम करते हुए अपने प्रधान वज़ीर से बात-चीत कर रहा था। तभी उसे खबर मिली कि एक सौदागर अजीब चीज़ें ले शहर में आया हुआ है। उसके यहाँ से कोई अच्छी चीज़ खरीद कर अपने वज़ीर को इनाम देने के ख्याल से खलीफ़ा ने सौदागर को बुला भेजा।

खलीफ़ा ने सौदागर की पेटी खुलवाकर उसमें सजाई गयी अंगूठी, हार, बर्तन, कंघी इत्यादि को देखा और रत्न जड़ी एक कंघी खरीदकर वज़ीर की औरत के लिए उसे भेंट दी। खलीफ़ा ने सौदागर की पेटी के एक दराज़ को देख पूछा कि उसमें क्या है? सौदागर ने दराज़ खोलकर एक डिबिया और एक कागज़ निकाला।

"हुज़ूर, मैं नहीं जानता कि ये चीज़ें क्या हैं? एक व्यापारी ने यह बताकर ये चीज़ें मुझे दीं कि उसे मक्का की गलियों में ये चीज़ें मिली हैं। इन चीज़ों को तो कोई नहीं खरीदता। आप चाहें तो इनको लीजिये और जो दाम उचित समझें, सो दे दीजिये।" सौदागर ने कहा।

डिबिया में काला चूर्ण था। कागज़ पर किसी विचित्र भाषा में कुछ लिखा हुआ था। उस भाषा को खलीफ़ा और वज़ीर भी पढ़ न पाये। खलीफ़ा ने सौदागर को दाम देकर भेज दिया और अपने वज़ीर से कहा—"कोई ऐसे आदमी को ले लाओ जो इसे पढ़ सके।"

"सुनते हैं कि बड़ी मसजिद में रहनेवाले मुल्ला सलीम दुनिया की सारी भाषाएँ जानता है। शायद वह इस कागज़ को पढ़ सके।" वज़ीर ने जवाब दिया।

अरब की लोक कथा
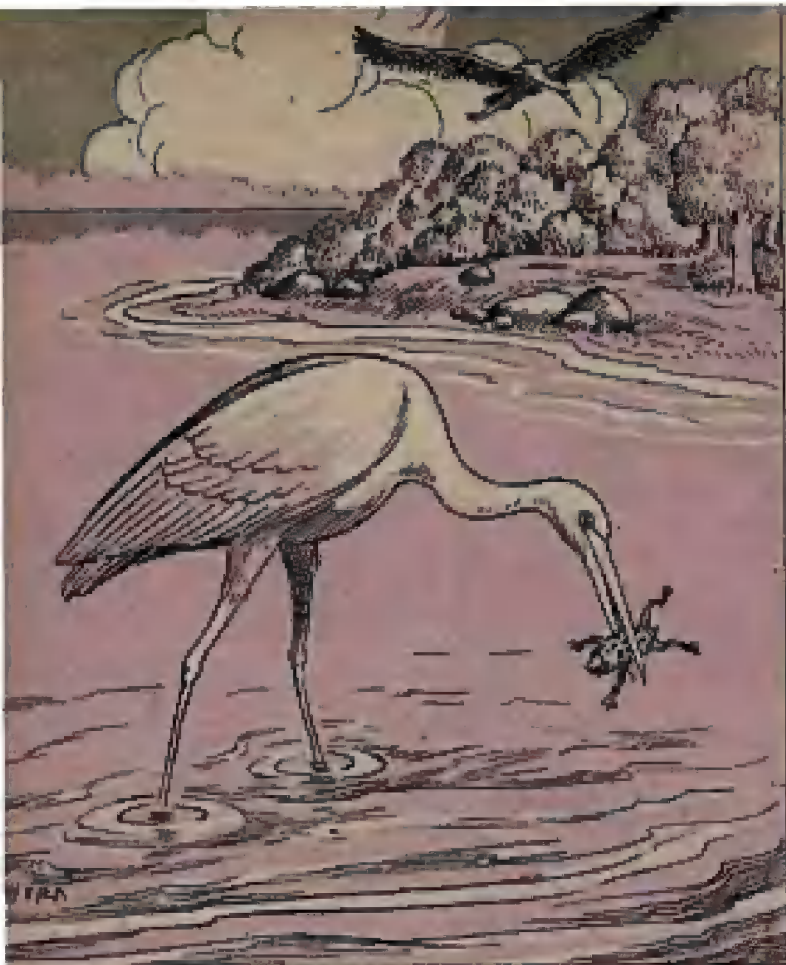
सलीम को बुलाया गया। उसने कागज को उलट-पलट कर देखा और कहा—"हुजूर, यह तो हूण भाषा है।"

"उसे पढ़कर बता दो।" खलीफ़ा ने कहा। सलीम ने पढ़कर यों बताया—

"इस काले चूर्ण को चुटकी भर सूंघ कर 'मुतबोर' पुकार कर कोई भी आदमी जिस रूप में बदलने की कामना करता है, वह उस रूप में बदल सकता है। तब उसे सभी प्राणियों की भाषाएँ समझ में आती हैं। इस प्रकार दूसरे रूप को पानेवाले लोग फिर से मानव रूप को प्राप्त करना चाहते हैं तो पूरब की ओर मुखातिब हो तीन बार सर नवाकर फिर से उसी शब्द का उच्चारण करना होगा। मगर शर्त यह है कि किसी पक्षी या जानवर के रूप में रहते समय हंसना नहीं चाहिये। हँसने पर उस शब्द को भूल जायेंगे और उसी पक्षी या जानवर के रूप में जिंदगी भर रहना होगा।"

सलीम के मुंह से ये बातें सुनकर खलीफ़ा बहुत खुश हुआ। सलीम से उसने यह शपथ करायी कि वह इस रहस्य को गुप्त रखेगा और उसे अच्छी पोशाकें भेंट देकर भेज दिया।

खलीफ़ा ने अपने वज़ीर से कहा—"हमने आज बढ़िया सौदा किया है। मेरे मन में कोई जानवर बनने की बड़ी इच्छा है। कल सवेरे तुम आ जाओ, हम सैर करने जायेंगे और ऐसी बातें सुनेंगे जिन्हें हमने आज तक न सुनी हों।"

दूसरे दिन सवेरे खलीफ़ा और वज़ीर टहलने निकल पड़े। दोनों राजमहल के बगीचे से होते हुए शहर के बाहर के एक तालाब के पास पहुँचे। वहाँ पर तरह-तरह के जानवर थे। उनको देखते हुए खलीफ़ा और वज़ीर के मन में यह विचार आया कि हम जिस जानवर के रूप में बदलना चाहते हैं, उस जानवर के रूप में बदल जायेंगे।

जब वे तालाब के पास पहुँचे, तब तालाब के किनारे एक बहुत बड़ा बगुला

खड़ा था। वह ठाट से चलते बीच बीच में मेंढकों को पकड़ कर खा जाता था। उसी समय उन्हें एक और बगुला तालाब के पास उड़ते आते हुए दिखाई दिया।

"हुजूर, अब ये दोनों बगुले मिलकर जरूर बात करेंगे। हम भी बगुलों में बदल कर उनकी बातचीत सुनेंगे।" वजीर ने खलीफ़ा से कहा।

खलीफ़ा ने काला चूर्णवाली डिबिया निकाली। दोनों ने चुटकी भर चूर्ण सूंघ लिया और कहा–"मुतबोर"। तुरंत वे दोनों बुगुलों के रूपों में बदल गये।

इस बीच में उड़कर आया हुआ बगुला मेंढक खानेवाले बगुले के पास आया। दोनों में बातचीत शुरू हो गयी। मेंढक खानेवाले बगुले ने दूसरे से पूछा–"क्या मैं तुम्हारे लिए दो मेंढक पकड़ लूं?"

इस पर दूसरे बगुले ने कहा–"नहीं, मुझे इस वक़्त भूख नहीं है। आज मुझे मेहमानों के सामने नृत्य करने का आदेश मिला है। मैं यहाँ पर अभ्यास करने आया हूं।" थोड़ी देर वह इधर-उधर घूमते नाचने का अभिनय करने लगा, तब वह एक ही पैर पर खड़ा हो गया। उसे देख खलीफ़ा और वजीर को बड़ी हँसी आ गयी। उनको हंसते देख वे दोनों बगुले उड़कर चले गये।

"इससे बढ़कर अच्छी हँसी मैंने अपने जन्म में नहीं देखी।" वजीर ने कहा।

"अगर हम न हँसते तो शायद वे गीत भी गाते।" खलीफ़ा ने कहा।

इसी समय उनकी हँसी फीकी हो गयी। क्यों कि उन्हें दूसरे रूप में रहते समय हँसना नहीं चाहिये था। बगुले के रूपों में रहकर वे हँस पड़े थे।

"हमको फिर से मानव बनना है तो हमें किस शब्द का उच्चारण करना है? मैं तो वह शब्द भूल ही गया। क्या तुम्हें याद है?" खलीफ़ा ने वजीर से पूछा।

"हमें पूरब की ओर घूम कर तीन बार सर नवा करके मु...मु...मु..." कहते

वजीर रुक गया। उसे भी वह शब्द याद न था।

दोनों परेशान हो गये। उनकी समझ में न आया कि क्या किया जाय? यदि वह शब्द याद न आवे तो उन्हें जिंदगी भर बगुले बनकर रहना होगा। राजमहल में लौटने पर भी कोई फ़ायदा न होगा। अगर बग्दाद की जनता से यह कहे कि एक बगुला खलीफ़ा के रूप में और दूसरा वजीर के रूप में काम करेंगे तो वह न मानेगी। कई दिनों तक दोनों इधर-उधर भटकते रहें। भूख लगने पर उन्हें मेंढक और गिरगिटों को खाने का मन न हुआ। इसलिए वे फल खाकर दिन काटने का प्रयत्न करने लगे। मगर लंबी नाक के कारण फल खाना भी उन्हें मुश्किल मालूम हुआ। इस बुरी हालत में उन्हें सिर्फ़ उड़ने में ही आनंद आता था। इसलिए वे बग्दाद नगर पर उड़ते गलियों में झांकने लगे। एक जगह कोलाहल देख उसका कारण जानने के ख्याल से वे दोनों राजमहल की छत पर बैठे राजमार्ग की ओर ताकने लगे।

गाजे-बाजे के साथ एक जुलूस निकला। एक आदमी ज़रीदार लाल वस्त्र पहने घोड़े पर सवार हो गलियों में जुलूस निकल रहा था और उसके चारों तरफ़ गुलाम थे। बगदाद के कई लोग उस जुलूस के पीछे चल रहे थे। वे लोग चिल्ला रहे थे–"बगदाद के शासक मीर्जा की जय!"

"वजीर, क्या तुम अब समझ गये कि मुझे क्यों इस तरह मुसीबत में फँसाया? उस मिर्जा का बाप एक मांत्रिक है। वह मेरा जानी दुश्मन है। वह कई दिनों से मुझ से बदला लेने की सोचता था। अभी हुआ क्या? क्या हम इसी रूप में रहेंगे? चलो, हम अपने पैगंबर के मखबरे के पास जाकर दर्शन करेंगे। शायद भूली हुई बात याद आ जाय!" खलीफ़ा ने कहा।

दोनों राजमहल की छत पर उड़े। मदीना की ओर चल दिये। मगर लगातार दो घंटे तक उड़ने पर आदत न होने की वजह से वे थक गये। बूढ़े वज़ीर ने कहा–"अब मुझ से न होगा। अलवा इसके शाम होने को है, आज रात को कहीं आराम करेंगे।"

नीचे एक घाटी में एक उजड़ा हुआ घर उन्हें दिखायी दिया। उस में रात बिताने के ख्याल से दोनों नीचे उतर आये। वह एक उजड़ा हुआ क़िला था। उस में कुछ कमरे ज्यों के त्यों सुरक्षित थे। दोनों उन कमरों से होते हुए आगे बढ़ने लगे।

वज़ीर झट रुककर बोला–"हुजूर! लगता है कि यहाँ पर भूत हैं। बगुले के रूप में होने पर भी मुझे भूतों का डर नहीं छोड़ता।"

खलीफ़ा ने भी रुककर ध्यान से सुना। कहीं से कराहने की आवाज़ आ रही थी। खलीफ़ा हिम्मत करके उस दिशा की ओर आगे बढ़ा। एक अंधेरे कमरे में गया तो देखता क्या है, एक उल्लू बैठे कराहते हुए आँसू बहा रहा था।

उल्लू ने अपने कमरे में दो बगुलों को देख खुशी के मारे चिल्लाकर कहा–
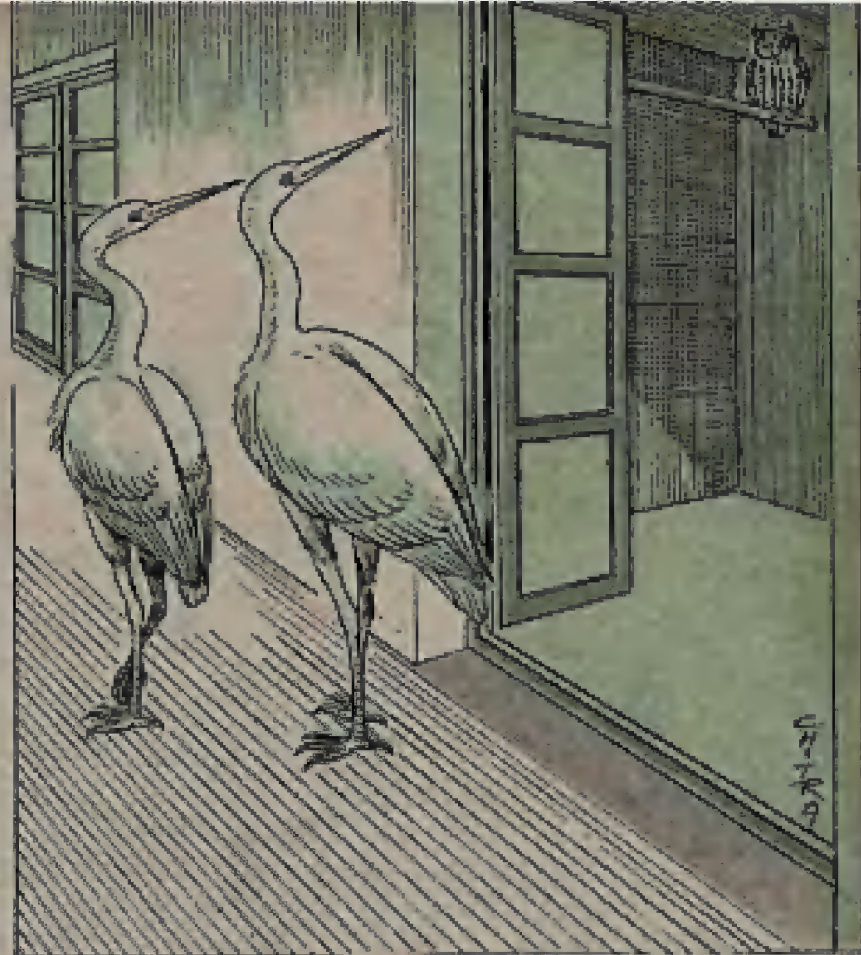
"आओ, बगुले! आओ, मुझे मुक्ति दिलाओ।"

खलीफ़ा ने उल्लू से पूछा–"हे उल्लू, तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुम भी हमारे जैसे धोखा खा चुकी हो! मगर हम पर भरोसा मत रखो। हमारी बुरी हालत का तुम्हें पता लगेगा तो तुम समझोगी कि हम कैसे असहाय हैं।" इन शब्दों के साथ खलीफ़ा ने उनकी पूरी कहानी उल्लू को सुनायी।

"अब मेरी कहानी सुनिये।" उल्लू ने अपनी कहानी शुरू की–

"मेरे पिता एक पूर्वी टापू का राजा है। आपको जिस मांत्रिक ने इस हालत में

पहुँचाया, उसीने मेरी भी यह हालत कर दी है। एक दिन वह मांत्रिक मेरे पिता के पास आया और उसने पूछा कि मेरी शादी उसके बेटे मिर्जा के साथ की जाय। मेरे बाप ने नाराज़ होकर उसको नौकरों के जरिये बाहर खदेड़वा दिया। इसके बाद वह अपना वेश बदल कर मेरे ही घर में नौकर बन गया। एक दिन उसने मुझे कोई चीज पीने को दी। उसे पीते ही मुझे यह भयंकर रूप मिला। उसने मुझे यहाँ लाकर रख दिया और कहा—"इस रूप में तुम्हारे साथ जब तक कोई शादी न करेगा, तब तक तुम यहीं रहोगी। हूँ! तुम्हारा बाप घमण्ड करता है? उसका फल भोगो! यह कहकर वह चला गया। अब कई महीने बीत गये। मैं यहाँ पर कुढ़ रही हूँ। मैं बाहर नहीं जा सकती, क्यों कि रोशनी नहीं देख सकती। रात के वक़्त बाहर भी जाऊँ तो प्रकृति के सौंदर्य को क्या देख सकती हूँ!"

अपनी कहानी सुनाकर उल्लू रोने लगी। "हम सब एक ही तरह की आफ़त में फँसे हुये हैं। मगर समझ में नहीं आता कि हम इस से कैसे छूट सकते हैं?" खलीफ़ा ने कहा।

"मैं समझती हूँ कि हम लोग इस आफ़त से बच सकते हैं। जब मैं छोटी लड़की थी, तब एक ज्योतिषी ने बताया था कि बगुले के द्वारा मेरी भलाई होगी। फिर से हमें मानव बन जाने के लिए मुझे एक उपाय सूझता है।" उल्लू ने बताया।

"वह क्या है?" खलीफ़ा और वजीर ने एक स्वर में पूछा।

"मांत्रिक महीने में एक बार सपरिवार आकर दावत उड़ाया करता है। उस वक़्त हर कोई अपनी करनी को बताता रहता है। आप लोग मंत्र का जो शब्द भूल गये हैं, शायद उनके मुँह से निकल सकता है।" उल्लू ने समझाया।

"वे लोग किस दिन आयेंगे? किस कमरे में दावत उड़ाते हैं? जल्दी बताओ।" खलीफ़ा ने पूछा।

"आप लोग अपनी ही मुक्ति की बात सोचते हैं, मुझे भी तो अपनी मुक्ति की बात सोचनी है? इसलिए आप दोनों में से कोई एक मेरे साथ शादी करने के लिए तैयार हो जाय तो मैं बाक़ी सब विवरण बता दूंगी। नहीं तो नहीं, इसलिए मुझे माफ़ कीजिये।" उल्लू ने बताया।

यह बात सुनकर खलीफ़ा और वज़ीर अवाक़ रह गये। वे आपस में सलाह-मशविरा करने के लिए कमरे से बाहर आये।

"वज़ीर, बड़ी आफ़त आ गयी। तुम उसके साथ शादी करो।" खलीफ़ा ने कहा।

"ओहं, यह बात मालूम हो जायगी, तो मेरी औरत मेरी आँखें निकाल कर रख देगी। आलावा इसके मैं बूढ़ा हूँ। हुजूर तो जवान हैं और अब तक शादी भी न हुई है।" वज़ीर ने कहा।

"यही तो मुसीबत है! इस राजकुमारी की उम्र क्या है? यह कैसी खूबसूरत है? मैं क्या जानूं?" खलीफ़ा ने संदेह प्रकट किया।
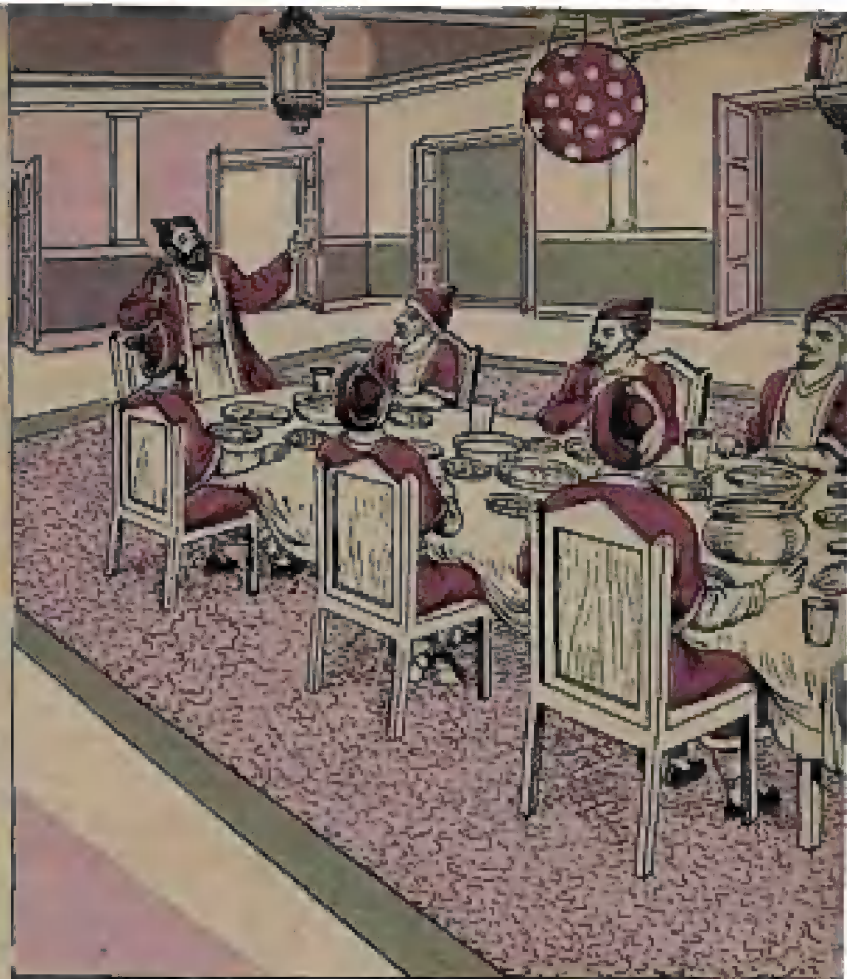
दोनों ने बड़ी देर तक तर्क-वितर्क किया। वज़ीर ने यहाँ तक साफ़ कह दिया कि वह जिंदगी भर बगुला बनकर रहने को तैयार होगा, मगर उस उल्लू के साथ शादी न करेगा। खलीफ़ा को अब उल्लू के साथ शादी करने को मानना पड़ा।

खलीफ़ा का निर्णय सुनकर उल्लू बहुत प्रसन्न हो उठी और बोली—"आप लोग ठीक समय पर आ गये हैं। आज ही मांत्रिक दावत पर आयेगा। मैं आप लोगों को वह जगह दिखाती हूँ जहाँ वे लोग दावत उड़ाते हैं।" इन शब्दों के साथ उल्लू उन्हें अपने साथ ले गयी। एक गिरी हुई दीवार से एक बड़ा कमरा

दिखाई दे रहा था। उसमें रंग-बिरंगी बत्तियाँ जल रही थीं। एक मेज पर पकाये गये पदार्थ रखे गये थे। उस मेज़ के चारों तरफ़ आठ आदमी बैठे थे। उनमें सौदागर भी था। उसे खलीफ़ा और वज़ीर ने पहचान लिया।

ये बातें सौदागर बतला रहा था।

किसी ने सौदागर से पूछा–"उनको फिर से आदमी बनने के लिए कौन-सा शब्द बताया?"

"मुतबोर" नामक हूण शब्द बताया है। उसका उच्चारण करना जरा मुश्किल है।" सौदागर ने जवाब दिया।

यह शब्द सुनते ही वज़ीर और खलीफ़ा की खुशी का ठिकाना न रहा। दोनों एक साथ पूरब की ओर मुड़कर तीन बार सर नवाकर चिल्ला उठे–"मुतबोर"। दूसरे ही क्षण वे मनुष्य बन गये। उस खुशी में दोनों गले लगे।

जब उन लोगों ने लौटकर देखा तो वहाँ पर एक अपूर्व सुंदरी खड़ी हुई थी। उस युवती ने हँसते हुए खलीफ़ा से पूछा–"क्या आपने उल्लू को नहीं पहचाना?"

उसे देखते ही खलीफ़ा को लगा कि वह अपनी क़िस्मत के कारण ही बगुला बना गया है। इसके बाद वे तीनों बग्दाद के लिए रवाना हो गये।

खलीफ़ा को देख शहर के लोग बहुत खुश हुए। उन लोगों ने सोचा था कि खलीफ़ा मर गया है। उन लोगों को मीर्जा पर बड़ा क्रोध आया। लोगों ने राजमहल में घुस कर मीर्जा और मांत्रिक को पकड़ा। राजकुमारी जिस कमरे में उल्लू बनकर रही, उसी कमरे में मांत्रिक को खलीफ़ा ने फाँसी के तख्ते पर चढ़ाया। मगर उसने मीर्जा को सजा न दी। क्यों कि वह अपने बाप की बुराई को जानता न था। खलीफ़ा ने मीर्जा के द्वारा चुटकी भर काला चूर्ण सुंघवा कर उसको बगुला बनवा कर छोड़ दिया।

इसके बाद खलीफ़ा और राजकुमारी का विवाह ठाठ से मनाया गया और वे बहुत साल तक सुखपूर्वक जीवित रहें।

वर की परीक्षा

पुराने जमाने में स्कंधपुर पर नागेन्द्र नामक राजा राज्य करता था। उसके कुंदनंदिनी नामक एक सुंदर कन्या थी। उसके यौवन और सौंदर्य की कहानियाँ अनेक प्रकार से कई देशों में कही व सुनी जाती थीं।

अपनी पुत्री का सौंदर्य नागेन्द्र के लिए गर्व का कारण नहीं बना बल्कि विपदाओं का कारण बन गया। अनेक देशों के महाराजाओं ने नागेन्द्र के पास समाचार भेजा कि उसकी पुत्री का विवाह उनके साथ करे। पड़ोसी देश कनकगिरि तथा उदयगिरि के महाराजाओं ने इस प्रकार का संदेशा ही नहीं भेजा बल्कि यह चेतावनी भी दी कि उनकी इच्छाओं की पूर्ति न करे तो उसका बड़ा बुरा परिणाम होगा। इस कारण नागेन्द्र बड़ी मुशीबत में फँस गया। वह सोचने लगा कि कुंदनंदिनी का विवाह किसके साथ करे? यदि किसी एक राजा के साथ करे तो दूसरे राजा इसे अपना अपमान समझेंगे और उससे बदला लेने की सोचेंगे। असल में स्कंधपुर छोटा राज्य है, उसके खतरे में पड़ने की गुंजाइश है।

नागेन्द्र को कुछ नहीं सूझा। उसने अपनी पुत्री से ही सलाह मांगी। कुंदनंदिनी ने बताया कि वह एक परीक्षा लेगी, उसमें जो राजकुमार सफल निकलेगा, उसके साथ वह विवाह करेगी। नागेन्द्र को यह सलाह अच्छी लगी। इसके द्वारा किसी को उससे असंतुष्ट होने का मौक़ा न मिलेगा।

नागेन्द्र ने अपनी पुत्री के द्वारा ली जानेवाली परीक्षा के लिए हाजिर होने सभी देशों के राजा और राजकुमारों के पास संदेशा भेजे।

कुमकुम गोयंका

निश्चित तिथि तक अनेक देशों के राजा और राजकुमार स्कंधपुर में आ पहुँचे। जिस मण्डप में परीक्षा ली जानेवाली थी, उसमें तीन छोटी-छोटी पेटियाँ रखी गयीं। एक पेटी में पूरे सोने के सिक्के भर दिये गये थे। दूसरी में सब चान्दी के सिक्के तथा तीसरी में सोने व चान्दी के सिक्के मिला कर भर दिये गये थे। तीनों पेटियों पर ढक्कन थे। एक पर लिखा था— "सोना-सिर्फ़-सोना", दूसरी पर "चान्दी-सिर्फ़-चान्दी" और तीसरी पर "सोना-चान्दी" लिखा गया था। उन पेटियों के ढक्कन इस तरह बदल दिये गये थे कि ढक्कन पर जो नाम लिखे थे, वे सिक्के उस पेटी में न हो। याने जिस पेटी में सोने के सिक्के थे, उसके ढक्कन पर 'सोना-सिर्फ़-सोना' लिखा ढक्कन न था। इसी प्रकार चान्दी के सिक्कोंवाली पेटी के ढक्कन पर "चान्दी सिर्फ़ चान्दी" वाला ढक्कन न था। वैसे ही 'सोना-चान्दी' मिलायी गयी पेटी के ढक्कन पर 'सोना-चान्दी' लिखा ढक्कन न था। यह बात सब के सामने घोषित की गयी। शर्त यह थी कि किसी भी पेटी में हाथ डालकर उसमें झांककर देखे बिना एक सिक्के को बाहर निकालना होगा। उस एक ही सिक्के को देख यह बताना होगा कि किस किस पेटी में क्या क्या सिक्के हैं? केवल कहना ही नहीं, बल्कि सकारण साबित करना होगा।

किसी भी राजा या राजकुमार की समझ में न आया कि यह कैसी शर्त है और एक सिक्के को देख किस पेटी में क्या सिक्के हैं, यह कैसे कहा जाय? अटकल से बता भी दिया जाय, पर सकारण साबित करना है! इसलिए सब लोग खीझ उठे। बहुत-कुछ सोचने पर भी किसी को कोई उपाय न सूझा।

पृथुल देश का मंत्री-पुत्र बालचन्द्र बड़ा योद्धा ही नहीं, बल्कि बड़ा मेधावी भी था। उसने सभी प्रकार की कलाओं तथा शास्त्रों का अभ्यास किया था। उसके

दिमाग में सहसा कोई उपाय सूझा। वह मण्डप के बीच आया। तीनों पेटियों को उसने ध्यान से देखा। 'सोना-चान्दी' वाली पेटी का ढक्कन उठाकर एक सिक्का बाहर निकाला। वह चान्दी का सिक्का था। उसने झट कह दिया–'इसमें सब चान्दी के सिक्के हैं।' 'सोना-सिर्फ़-सोना' लिखी गयी पेटी में से एक सिक्का निकाल कर कहा–'इसमें सोना व चान्दी के सिक्के हैं।' और तीसरी पेटी में सब सोने के सिक्के हैं। सभासदों ने आश्चर्य के साथ पेटियों को खोलकर देखा। उसके कहे मुताबिक़ सब सही थे। सबने उस युवक से पूछा–"अब कारण सहित अपने निर्णय को साबित करो।"

बालचन्द्र ने यों बताया–"मैंने 'सोना-चान्दी' लिखा ढक्कन उठाकर एक सिक्के को बाहर निकाला। वह चान्दी का सिक्का था। पहले कहे मुताबिक़ उसमें 'सोना व चान्दी' के सिक्कों का होना नामुमकिन था। क्यों कि 'सोना-चान्दी' जिस पेटी में भरे हैं, उसमें 'सोना-चान्दी' के लिखा ढक्कन नहीं होना चाहिये। इसलिए उसमें या तो पूरे सोने के सिक्के होने चाहिये, या चान्दी के। मेरे हाथ में चान्दी का सिक्का आया है, इसलिए उसमें पूरे चान्दी के ही सिक्के होने चाहिये। 'सोना-सिर्फ़-सोना' लिखे गये ढक्कन वाली पेटी में पूरे सोने के सिक्के नहीं हो सकते। यह भी हम जानते हैं कि उसमें किसी भी हालत में चान्दी के सिक्के न होंगे। इसलिए हम आसानी से समझ सकते हैं कि उसमें सोना व चान्दी के सिक्के मिले होने चाहिये। अब तीसरी पेटी में पूरे सोने के सिक्के ही हैं।

बालचन्द्र के मुंह से ये बातें सुनकर सबने ख़ुशी के मारे तालियाँ बजायीं। कुंदनंदिनी ने सबके सामने बालचन्द्र के गले में फूलों की माला डाल दी। नागेन्द्र खतरे से बच गया था। इसलिए उसने प्रसन्नता के साथ वर और वधू को आशीर्वाद दिया।

जैसे को तैसा

राजेश और गोपेश के खेत आस-पास थे। एक साल दोनों ने फ़सल की कटाई के बाद धान के ढेर लगवाये। राजेश दुपहर के समय खाना खाने घर जाते हुए गोपेश से बोला–"गोपेश, मेरे लौटने तक मेरे ढेर की देखभाल करो।"

राजेश के जाते ही गोपेश के मन में लालच पैदा हुई। उसने राजेश के अनाज के ढेर से दस झाबे धान निकाल कर अपने ढेर में डाल दिया।

राजेश ने घर से लौट कर पूछा–"गोपेश, लगता है कि मेरा ढेर घट गया है, क्या बात है?"

"चिड़ियों का दल आकर खा गया।" गोपेश ने जवाब दिया।

"चिड़ियों को हाँक देते भाई?" राजेश ने पूछा।

"तुम ने केवल ढेर की देखभाल करने को कहा था, चिड़ियों को हाँकने की बात तो नहीं कही।" गोपेश ने जवाब दिया।

इसके बाद गोपेश खाने के लिए घर जाते हुए राजेश से बोला–"राजेश, मेरे धान के ढेर पर चिड़ियों का दल आ बैठे तो हाँक देना, समझें!"

गोपेश घर चला गया। राजेश ने गोपेश के अनाज के ढेर में से बीस झाबे धान निकाल कर अपने ढेर में डाल दिया।

"अरे, मेरा ढेर घट गया है, क्या बात है?" गोपेश ने लौट कर पूछा।

"बवंडर आया तो धान उड़ गया। मैं क्या करूँ?" राजेश ने जवाब दिया।

—निर्मलानंद
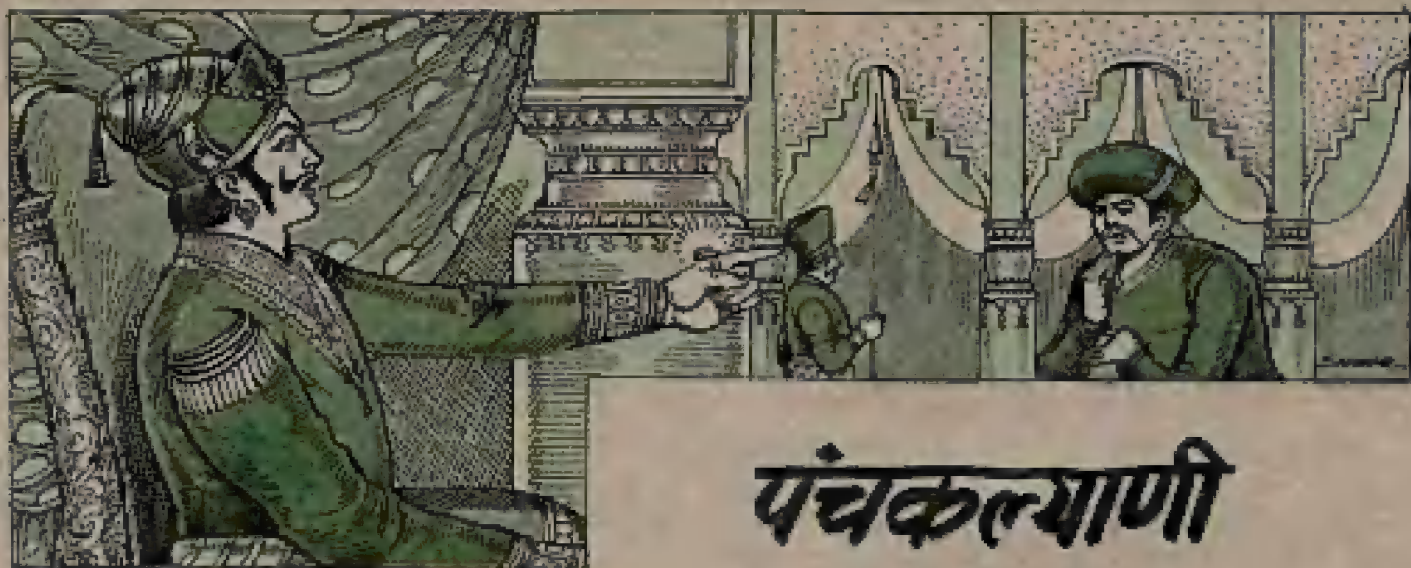
पंचकल्याणी

एक राजा के पास बीरदास नामक एक दरबारी था। वह विश्वासपात्र राजभक्त था। राजा भी उसे बहुत चाहता था। बदक़िस्मती से एक बार बीरदास के तीन पुत्रों और राजकुमारों के बीच झगड़ा हुआ। उस झगड़े में एक राजकुमार मर गया।

यह बात मालूम होते ही राजा ने बीरदास को बुला भेजा और डाँटकर कहा–"तुम्हारे बेटों ने मेरे पुत्रों के साथ झगड़ा क्यों किया? मेरा पुत्र मर गया है, इसलिए इसी क्षण में तुम्हारे तीनों पुत्रों को फाँसी के तख्ते पर लटकवा सकता हूँ। मगर इससे मेरा मरा पुत्र लौटकर नहीं आयगा। मैं तुमको एक काम सौंपने जा रहा हूँ। वह बड़ा ही खतरनाक काम है। मगर तुम वह काम न करोगे तो तुम्हारे पुत्रों के प्राण नहीं रहेंगे।"

"मैं अपने पुत्रों के प्राणों की अपेक्षा आपकी आज्ञा का पालन करना प्रथम कर्तव्य मानता हूँ, महाराज! मुझे आदेश दीजिये कि क्या करना होगा?" बीरदास ने पूछा।

"श्यामल नगर के राजा के पास एक पंचकल्याणी नामक एक बहुत ही मशहूर घोड़ा है। तुम अपने पुत्रों के साथ जाकर उस घोड़े को पकड़ लाओ। तुम लोगों को मुँह माँगा सोना दूँगा। यात्रा के लिए घोड़े दूँगा। यह काम कैसे पूरा कर सकोगे, यह तुम्हारी अक़्लमंदी पर निर्भर है। तुम असमर्थ नहीं हो और उल्टे मेरे प्रति पूरा विश्वास रखते हो। इसलिए मैं तुमको अपना दुश्मन नहीं मानता।" राजा ने कहा।

"जी, हुजूर! कल सवेरे ही श्यामल देश के लिए रवाना हो जाऊँगा।"

रमणलाल

चार घोड़े भिजवा दिये। वीरदास और उसके पुत्र उन घोड़ों पर श्यामल देश के लिए रवाना हुए।

श्यामल नगर समुद्र के किनारे बसा था। वहाँ की यात्रा कठिनाइयों से भरी थी। वीरदास जब अपने पुत्रों के साथ श्यामल नगर की सीमा तक पहुँचा, तब सूर्यास्त हो चुका था। वहाँ पर एक बहुत बड़ा मंदिर था। मंदिर के चारों तरफ़ हज़ारों एकड़ जमीन थी जो मंदिर से संबंधित थी। मंदिर के पास ही उस मंदिर के निधिपालक का मकान, धान्यागार और कई इमारतें भी थीं। उनके बाजू में भूसे के ढेर लगे थे।

वीरदास सीधे मंदिर के निधिपालक के घर गया। अपने और अपने पुत्रों का परिचय देकर निवेदन किया–"हम आपके नगर के लिए नये हैं। यहाँ पर हम राजा के काम पर आये हैं। अंधेरा हो गया है। इसलिए आज रात को हमारे खाने व सोने का इंतज़ाम करायेंगे तो हम आपका ऋण चुकायेंगे।"

निधिपालक ने वीरदास के हाथ में भारी थैली देखी और समझ लिया कि उसमें सोना भरा है। इसलिए नम्रता पूर्वक बोला–"यह कौन बड़ी बात है? आप लोग बड़ी दूर से आये हैं। आपके

वीरदास ने उत्तर दिया। वह जानता था कि राजा ने उसे जो काम सौंपा है, वह खतरे से खाली नहीं है, बल्कि असंभव है। श्यामल देश का राजा उस घोड़े को अपनी जान से ज्यादा मानता है। वह उस घोड़े को किसी भी मूल्य पर बेचने को तैयार नहीं है। उसे चुराना मानवों के लिए नामुमकिन है। ऐसा प्रयत्न करनेवालों को राजा बेरहमी से मार डालता है। मगर यदि वीरदास अपने बेटों की जान बचाना चाहता है, तो उसे किसी न किसी तरह पंचकल्याणी को पकड़ लाना होगा।

दूसरे दिन सबेरे राजा ने वीरदास के घर सोने के सिक्कों से भरी थैली और

ठहरने व खाने-पीने का सारा प्रबंध कर देता हूँ। आप जैसे मेहमान हमारे यहाँ बहुत कम आते हैं।"

वीरदास और उसके पुत्रों ने आराम से नहाया-धोया, खाया-पिया। तब वीरदास ने अपने पुत्रों को आराम करने के लिए भेजा और निधिपालक के पास जाकर उसने गुप्त रूप में सारी बातें बतायीं। इस कार्य में उसकी सलाह भी माँगी।

जब निधिपालक को मालूम हुआ कि ये लोग पंचकल्याणी को ले जाने के लिए आये हैं, वह चौंक गया। फिर भी वीरदास से बोला–"महाशय, तुम लोगों ने नाहक़ कष्ट किया। यह कार्य होने को नहीं है। इसलिए सवेरा होते ही तुम लोग अपने घर लौट सकते हो। हमारे राजा उस घोड़े को किसी भी दाम नहीं बेचेंगे। उसे चुराना भी मानवों के लिए संभव नहीं है। भूल से यदि कोई ऐसा प्रयत्न करेगा भी तो उसकी जान बचेगी नहीं। मैं सच्ची बात बता रहा हूँ।"

वीरदास ने गहरी सांस लेकर कहा–"हम लोग जान के खतरे से बचने के उपाय सोचने की हालत में नहीं हैं। हम यदि पंचकल्याणी को लिये बिना वापस लौटते हैं तो हमारा राजा हमें मार डालेंगे। मगर बिना प्रयत्न किये मरना हमें कतई पसंद नहीं है। इसलिए भले ही हमारी जान चली जाय, हम पंचकल्याणी को चुराने आये हैं। हम प्रयत्न करेंगे;
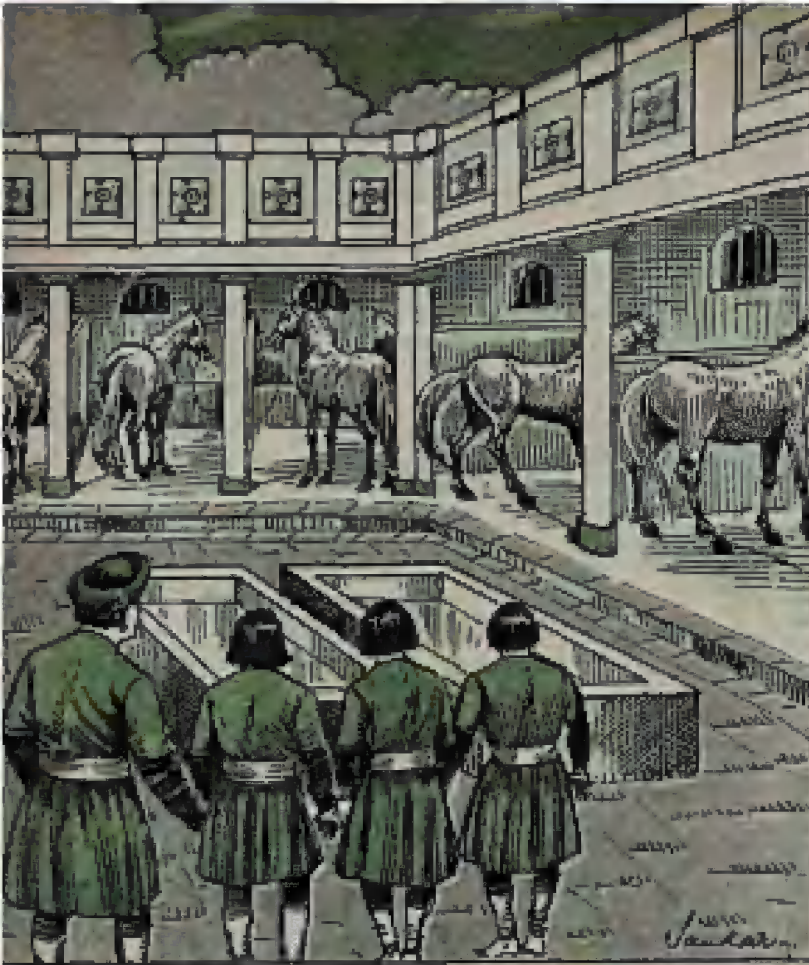
यदि इस प्रयत्न में हम मर भी जायेंगे तो हमें कम से कम यह संतोष होगा कि हम अपने राजा की सेवा करते मर गये हैं। राजद्रोही बनकर मरने की अपेक्षा यह उत्तम है न? आप चाहेंगे तो हमारी एक मदद कर सकते हैं। हमको किसी न किसी तरह राजा के घुड़साल में पहुँचाने का उपाय सोचिये। इस थैली में जो सोना है, हम आपको दे देते हैं। घुड़साल में पहुँचने पर हम अपना प्रयत्न करेंगे।"

निधिपालक बड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला–"आज रात को ही मैं तुम लोगों को राजा के घुड़साल में पहुँचा सकता हूँ। राजा के घोड़ों के वास्ते घास और भूसा अपने नौकरों के साथ भेज रहा हूँ। उसके साथ तुम लोगों को भी भेज सकता हूँ। मगर याद रखो, तुम लोग घुड़साल से जान के साथ बाहर नहीं निकल सकते। मुझे तो दु:ख इस बात का है कि तुम लोगों की मौत का कारण मैं बन रहा हूँ।"

"महाशय, आप यह समझिये कि हम लोग अपनी आत्महत्या कर रहे हैं। हमको घास-फूस के साथ आप भेज देंगे तो आपको पाप नहीं लगेगा, बल्कि आपका पुण्य होगा। मेहरबानी करके हम को भेज दीजिये।" बीरदास ने गिड़गिड़ाया।

निधिपालक ने उन चारों को खुद बोरों में बंद किया, अपने नौकरों को बुला कर उन बोरों को गाड़ियों पर लदवाया। बीरदास से उसने पहले ही कहा था कि सोने की थैली वह उन लोगों के लौटने तक अपने पास सुरक्षित रखेगा और लौटने पर उन्हें अवश्य वापस ले जाना होगा।

घास-फूस को श्यामल नगर के घुड़साल में पहुँचाते-पहुँचाते आधी रात हो गयी। घुड़साल के नौकर घास-फूस और बोरों को एक झोंपड़ी में डाल सो गये।

थोड़ी देर बाद बीरदास और उसके बेटे बोरों को फाड़ कर बाहर आये। बिना आहट के दबे पाँव जाकर पंचकल्याणी वाले घुड़साल में पहुँचे।

पंचकल्याणी उत्तम नस्ल का घोड़ा था, इसलिए उन लोगों ने बड़ी आसानी से पहचान लिया। वह भी नये लोगों को देखते ही भड़क उठा, गहरी साँस ले धीरे से काँपने लगा।

वीरदास ने इस पर ध्यान न दिया। झट उसके पास जाकर उसका रस्सा खोलने लगा। वीरदास का हाथ लगते ही घोड़ा हिनहिनाते उसे और उसकी मदद करने वाले उसके पुत्रों को लात मारने को हुआ। इसलिए वे चारों थोड़ी दूर भाग गये और लातों से बच गये।

इतने में पहरेदारों ने आकर वीरदास और उसके पुत्रों को बन्दी बनाया। राजा की सेवा में हाज़िर किया।

ये लोग पंचकल्याणी को चुराने आये हैं? इनको घुड़साल में ही सवेरा होने तक बांध कर रखो। सुबह फ़ैसला करेंगे।" राजा ने आदेश दिया।

"सवेरा होते ही राजा ने बंदियों को अपने महल में बुला भेजा। उनके बंधन खुलवा कर बिठाया। तब पूछा—"तुम लोग कौन हो? किस वजह से इस खतरे में फँस गये हो? तुम लोग अपनी कहानी सुनाओ।"

वीरदास ने आदि से लेकर अंत तक सारी कहानी सच सच बतला दी।

राजा ने सारी कहानी सुनकर कहा—"वीरदास, मैं यक़ीन करता हूं कि इसमें तुम्हारा कोई स्वार्थ नहीं है। मगर तुम सब इस समय खतरे की हालत में हो। इससे बढ़कर कोई और खतरनाक हालत में कभी तुम्हारी जिंदगी में तुम्हें फँसनी पड़ी थी क्या? यदि हो तो, बतला दो। अगर मैं उस पर यक़ीन कर सकूं तो तुम्हारे पुत्रों में से एक को प्राणों से छोड़ दूंगा।"

वीरदास ने अपनी बीती ज़िंदगी की याद करते हुए कहा—"महाराज, ऐसी घटना मेरी ज़िंदगी में और हुई है?"

"क्या है, वह? बतला दो।" राजा ने कहा। (अगले अंक में पहली कहानी)

धन की प्राप्ति

एक सेठ एक ज्योतिषी से बात कर रहा था। तभी कहीं से एक गरीब लड़का वहाँ आ पहुँचा। ज्योतिषी ने सेठ को उस लड़के को दिखाते हुए कहा–"इसका बाप मजूरी करके अपना पेट पालता है। लेकिन क्या हुआ? इसको जल्द ही धन की प्राप्ति होनेवाली है और इसका बाप सुखी होगा।"

सेठ को ज्योतिषी पर बड़ा विश्वास था। इसलिए वह उस लड़के के बाप की खोज करते गया और उससे बोला–"तुम अपने बेटे की जिम्मेदारी कुछ दिन तक मुझ पर डाल दो। मैं तुमको दो सौ सिक्के दे देता हूँ।" मजदूर को संदेह हुआ। उसने पूछा–"मैं नहीं समझा कि आप किस उद्देश्य से यह बात कह रहे हैं?"

"मेरे मन में कोई कपट नहीं है। लड़के को देख रीझ गया। मेरे घर में उसको राजकुमार की तरह पालेंगे। चाहे तो तुम तीन सौ सिक्के और ले लो।" सेठ ने बताया।

मजदूर को पाँच सौ सिक्के मिले। उसका बेटा सेठ के घर में राजकुमार की तरह पलने लगा। एक महीना बीता, पर सेठ को कहीं से धन न मिला।

सेठ ने ज्योतिषी के पास जाकर सारी बातें सुनाकर कहा–"एक महीना बीत गया, मगर लड़के को अभी तक धन की प्राप्ति नहीं हुई। क्या बात है?"

"क्यों नहीं? तुमने जो धन दिया, उससे इस लड़के के बाप ने दस भैंसें खरीदीं और आराम से वह व्यापार करता है।" ज्योतिषी ने जवाब दिया।

—रमाकांत
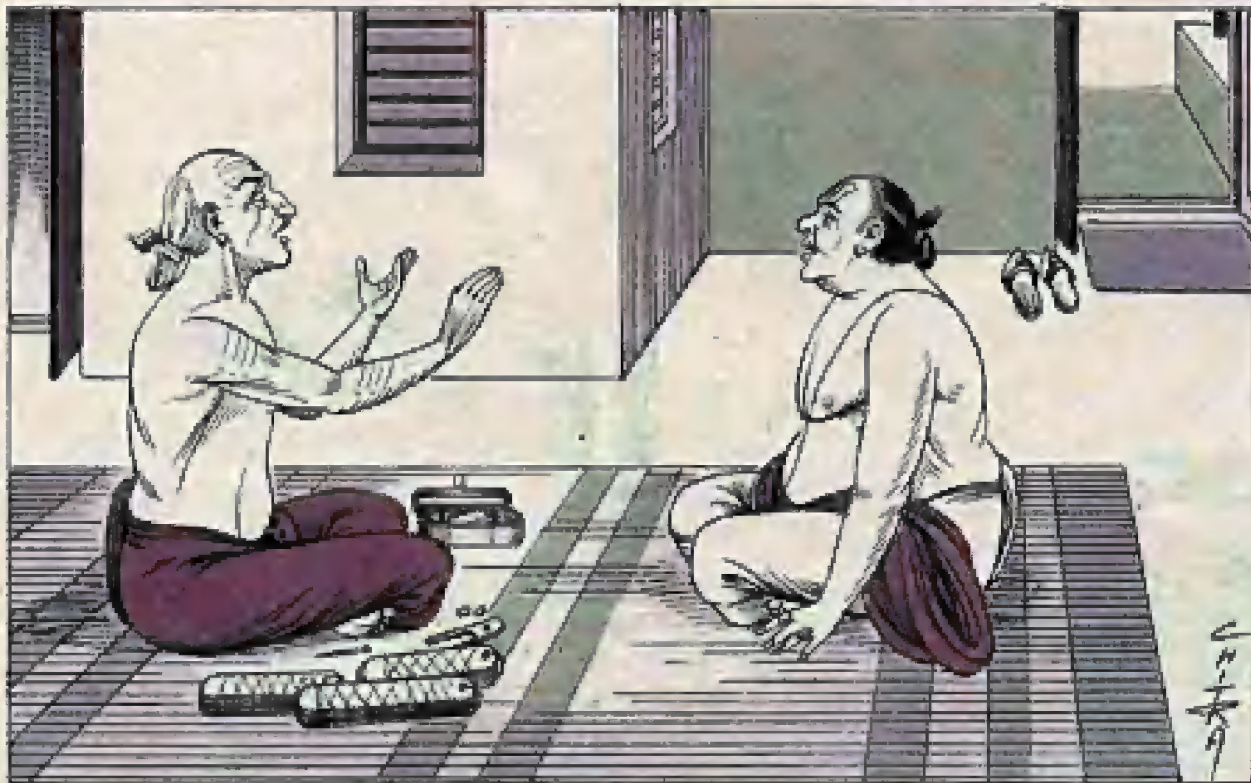
पांडव जुए में हारकर द्रौपदी के साथ वनवास के लिए हस्तिनापुर से चल पड़े। इन्द्रसेन वगैरह चौदह सेवक रथ ले उनके साथ निकले।

रास्ते में वे लोग वर्द्धमानपुर में पहुँचे, जब पांडव उस नगर से होकर जाने लगे तब हस्तिनापुर से आये हुए कुछ लोग उनसे आ मिले और बोले–"युधिष्ठिर जी, आप लोग हमको छोड़कर कहाँ जायेंगे? हमको भी अपने साथ ले जाइये।"

युधिष्ठिर ने उन लोगों से बताया–"मैं तुम्हारे भाई जैसा व्यक्ति हूँ। मेरी बात भी सुन लो। हम जो यातनाएँ भोगने जा रहे हैं, उनकी कल्पना करके हमारे दादा भीष्म, हमारे पितृतुल्य धृतराष्ट्र, उनसे भी बढ़कर हमारी माताजी कुंतीदेवी दुःख में डूबे हुए हैं। तुम लोग जाकर उनको सांत्वना दो, तो हमारा शुभ होगा।"

युधिष्ठिर के मुँह से ऐसी विनयपूर्ण बातें सुनकर वे नागरिक मन ही मन पांडवों की प्रशंसा करके हस्तिनापुर को लौट गये।

इसके उपरांत पांडव रथों पर सवार हो जंगल की ओर बढ़े। सूर्यास्त के समय तक वे लोग एक विशाल वृक्ष के पास पहुँचे और उस रात को उस वृक्ष के नीचे आराम करने का निश्चय किया। आस-पास के गाँव के अनेक ब्राह्मण आये, और रात भर पांडवों को पुण्य कथाएँ सुनाते रहें। सवेरा होते ही पांडव गंगा में स्नान करके निकलने ही जा रहे थे, तब

२७. मैत्रेय का शाप

भाइयों को कष्ट नहीं दे सकता।" युधिष्ठिर ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"हम अपने कष्टों को आप झेल लेंगे। हमारे कारण आप लोगों को कष्ट उठाने की जरूरत नहीं। हम केवल आप लोगों की संगति चाहते हैं।" ब्राह्मणों ने कहा।

युधिष्ठिर ने अपने पुरोहित धौम्य से पूछा–"मुनिवर, ये ब्राह्मण हमारे साथ सब तरह के कष्ट झेलने को तैयार हैं। हमारे मना करने पर भी नहीं सुनते। जंगल में इनका पोषण कैसे किया जाय? कोई उपाय हो तो बता दो।"

"युधिष्ठिर, अन्न आदित्यमय है। तुम सूर्य की आराधना करके उनकी महिमा से ब्राह्मणों का पोषण करो।" धौम्य ने युधिष्ठिर को सूर्य का स्त्रोत्र सिखाया।

युधिष्ठिर ने कुछ दिन तक निष्ठा के साथ सूर्य की आराधना की। सूर्य ने प्रत्यक्ष होकर तांबे का एक पात्र देते हुए कहा–"युधिष्ठिर, यह अक्षय पात्र है। द्रौपदी कंद-मूल इस पात्र में पकाकर रख दे तो तुम्हारे वनवास के बारह वर्ष पूरा होने तक इसमें तुम लोगों तथा तुम्हारे अतिथियों को भी आहार प्राप्त होगा।" इन शब्दों के साथ सूर्य गायब हो गया।

युधिष्ठिर ने वह अक्षय पात्र द्रौपदी के हाथ दिया। उस दिन से लेकर द्रौपदी

ब्राह्मणों ने उनके साथ चलने का अनुरोध किया।

"हम अपना सर्वस्व खोकर वनवास करने जा रहे हैं। जंगलों में तुम लोग कैसे जिओगे? हमारी वजह से तुम लोग कष्ट भोगोगे तो हम सहन नहीं कर पायेंगे। इसलिए तुम लोग अपने अपने घर चले जाओ।" युधिष्ठिर ने समझाया।

"हम आप ही पर भरोसा करके चलना चाहते हैं तो आप का मना करना उचित न होगा।" ब्राह्मणों ने जवाब दिया।

"हम लोग असहाय हैं। तुम लोगों के वास्ते कंद-मूल लाने के लिए मैं अपने

तरकारी वगैरह पकाकर उस पात्र में रख देती तो उसमें से सब तरह के पदार्थ उपलब्ध होते। युधिष्ठिर प्रतिदिन पहले अतिथियों को खिलाकर तब अपने भाइयों को खाने देता और अंत में वह भोजन करता। सब के खा चुकने पर द्रौपदी भोजन करती।

कुछ समय बाद पांडव गंगा के किनारे को छोड़ पश्चिमी दिशा में जंगलों से होते हुए यमुना, दृषद्वती नदियों को पार कर सरस्वती नदी के तट पर स्थित काम्यक वन में पहुँचे। वह एक सुंदर प्रदेश था। उसमें अनेक मुनि रहा करते थे।

पांडव जब काम्यक वन में रहते थे, तब हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र ने विदुर को बुलाकर कहा–"विदुर, पांडवों के वनवास में चले जाने के बाद जनता हम से दूर रहती है। शायद ये लोग हमारा कोई अपकार कर बैठें! उनको निकट लाने का कोई उपाय हो तो बताओ।"

"राजन, धर्म, अर्थ और काम का मूल धर्म ही है। तुम धर्म का पालन करते हुए पांडव और अपने पुत्रों की भी रक्षा करो। पांडवों के राज्य को दुर्योधन ने शकुनि के द्वारा हड़प लिया है। पांडव तुम्हारे पुत्रों का निर्मूल करने की शक्ति रखते हैं। युधिष्ठिर को अपना राज्य वापस देकर दुर्योधन, शकुनि, कर्ण इत्यादि को उनके अधीन में रखो। भरी सभा में दुश्शासन के द्वारा द्रौपदी और भीम से क्षमा माँगने को कहो। युधिष्ठिर क्षमा करेंगे। आप ने मेरी सलाह माँगी, इसलिए मैंने अपने विचार बताये।" विदुर ने समझाया।

धृतराष्ट्र ने क्रोध में आकर कहा–"मैं अपने पुत्र को दूसरों के वास्ते कैसे त्याग सकता हूँ? मैं तुम्हारा आदर करता हूँ, फिर भी तुम अपनी कुबुद्धि नहीं छोड़ते। तुम मेरे पुत्रों की उन्नति देख नहीं सकते। तुम्हारी इन सलाहों का पालन करूँ तो मेरा सर्वनाश होगा। जब देखो, पांडवों की तारीफ़ करते नहीं थकते! तुम

जाकर उन्हीं लोगों के पास क्यों नहीं रहते?"

तुरंत विदुर ने रथ मंगवाया और काम्यक वन की ओर चल पड़ा।

विदुर जब काम्यक वन में पहुँचा, तब युधिष्ठिर ब्राह्मणों के बीच बैठे दिखाई दिये। युधिष्ठिर ने विदुर को दूर पर देखा तो भीम से बताया-"भीम, हम लोग जुएँ में अपने अपने आयुध नहीं हारे। उनको जीतने के लिए फिर जुआ खेलने के निमित्त शायद दुर्योधन और शकुनि ने हमें बुला ले जाने के लिए विदुर को भेजा है। वरना विदुर क्यों यहाँ पर आते? शायद उन लोगों का यह उद्देश्य होगा कि विदुर के बुलाने पर मैं अवश्य जाऊँगा। चाहे जो भी हो, अब मैं जुआ खेल नहीं सकता। अर्जुन का गांडीव, और तुम्हारे गदा को वे लोग जुएँ में जीत लेंगे तो हमें अपने राज्य की आशा छोड़ देनी पड़ेगी।"

इतने में विदुर वहाँ आ पहुँचे। युधिष्ठिर आदि ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और उनको उचित आसन पर बिठाकर उनके आगमन का कारण पूछा। विदुर ने वे सारी बातें युधिष्ठिर को बतायीं जो धृतराष्ट्र और विदुर के बीच हुई थीं। इस पर युधिष्ठिर ने विदुर से निवेदन किया कि ऐसी बात हो तो वे

पांडवों के साथ रह कर समय समय पर उन्हें सलाह देते रहें।

धृतराष्ट्र को मालूम हो गया कि विदुर काम्यक वन जाकर पांडवों से जा मिले हैं। यह सोचकर धृतराष्ट्र बेहोश हो गया कि विदुर की सलाह से पांडव पूरा लाभ उठायेंगे। थोड़ी देर बाद होश में आकर धृतराष्ट्र ने संजय से कहा-"संजय, विदुर मेरा भाई है; भाई ही नहीं, बल्कि मेरा मित्र भी है। बड़ा बुद्धिमान भी है। मैंने उसको बुरा-भला कहा तो वह रूठकर काम्यक वन में जाकर पांडवों से जा मिला है। उसके बिना मेरी बुद्धि काम नहीं कर रही है। तुम शीघ्र जाकर, विदुर को

वापस बुला लाओ।" ये शब्द कहते धृतराष्ट्र पश्चात्ताप करने लगा।

संजय काम्यक वन में गया। उसने युधिष्ठिर को समझाया कि वह विदुर को वापस ले जाने के लिए आया हुआ है। तब उसने विदुर से कहा–"महानुभाव, आप के चले आने के बाद धृतराष्ट्र दुःख से छटपटा रहे हैं। उन्होंने आपको वापस लिवा लाने के लिए मुझे भेज दिया है। आप वापस लौटकर उनके प्राणों की रक्षा कीजिये।"

विदुर युधिष्ठिर की अनुमति लेकर संजय के साथ हस्तिनापुर लौट आया। धृतराष्ट्र ने विदुर से गले लगकर कहा–"तुम बहुत ही अच्छे आदमी हो। मेरी बात मानकर फिर लौट आये हो। मैं इतने दिन बहुत परेशान था। मेरी गलतियों को क्षमा कर दो भाई।"

इस पर विदुर ने उत्तर दिया–"राजन, आपकी आज्ञा पाकर मैं लौट आया। मैंने आप से हित की बातें ही बतायी थीं। मेरी दृष्टि में पांडव और कौरव सब बराबर हैं। लेकिन पांडव बुरी हालत में हैं, इसलिए उनके प्रति मेरी सहानुभूति ज्यादा है। यह न्याय संगत भी है।"

दुर्योधन विदुर को अपने पिता के पास लौटे देख घबराया। उसने कर्ण, शकुनि तथा दुश्शासन को बुलवाकर कहा–"फिर विदुर लौट आये हैं। मैं नहीं जानता कि पांडवों के पक्षपाती विदुर पिताजी को क्या सलाह देनेवाले हैं? अगर पांडव फिर हस्तिनापुर को लौट आये तो मैं अपनी आत्महत्या कर लूँगा।"

शकुनि ने दुर्योधन को समझाया–"तुम भी मूर्ख की तरह बातें मत करो। तुम्हारे पिता के बुलाने पर भी पांडव वापस न आयेंगे। यदि वे लौट आये तो भी जुए में उन्हें हराकर फिर वनवास के लिए भेज दूँगा।"

कर्ण भांप गया कि शकुनि की सलाह से दुर्योधन संतुष्ट नहीं हुआ है। उसने

शकुनि और दुश्शासन से कहा–"हम लोग अभी युद्ध के लिए तैयार हो जंगल में रहनेवाले उन असहाय पांडवों का वध कर डालेंगे। वे लोग जब तक जिंदा रहेंगे, तब तक हमारे दुश्मन बने रहेंगे। इस समय न हो तो बाद को उन्हें जीतना असंभव है।"

कर्ण की बातों पर सब प्रसन्न हुए। सेना के साथ जाकर पांडवों से युद्ध करने का सब ने निश्चय कर लिया।

ठीक उसी वक्त महर्षि व्यास धृतराष्ट्र के पास आ पहुँचे और बोले–"मुझे यह बात बिलकुल पसंद नहीं आयी कि दुर्योधन आदि ने जुए में धोखा देकर पांडवों को वनवास के लिए भेज दिया। इस वक्त वन में रहनेवाले पांडवों से युद्ध करने के लिए तुम्हारा पुत्र जा रहा है। यदि युद्ध करने गया तो उसका बड़ा बुरा होगा। तुम अपने पुत्र के इस प्रयत्न को रुकवा दो। इस प्रकार अधर्म और अन्याय के होते तुम, भीष्म, द्रोण, विदुर आदि देखते हुए चुप कैसे हैं?"

इस पर धृतराष्ट्र ने उत्तर दिया–"महानुभाव, यह जो कुछ हो रहा है, हम सबको बिलकुल पसंद नहीं है। मगर पुत्र के प्रति विशेष प्रेम के कारण मैं उसको रोक नहीं पाता हूँ, वह मेरी बात
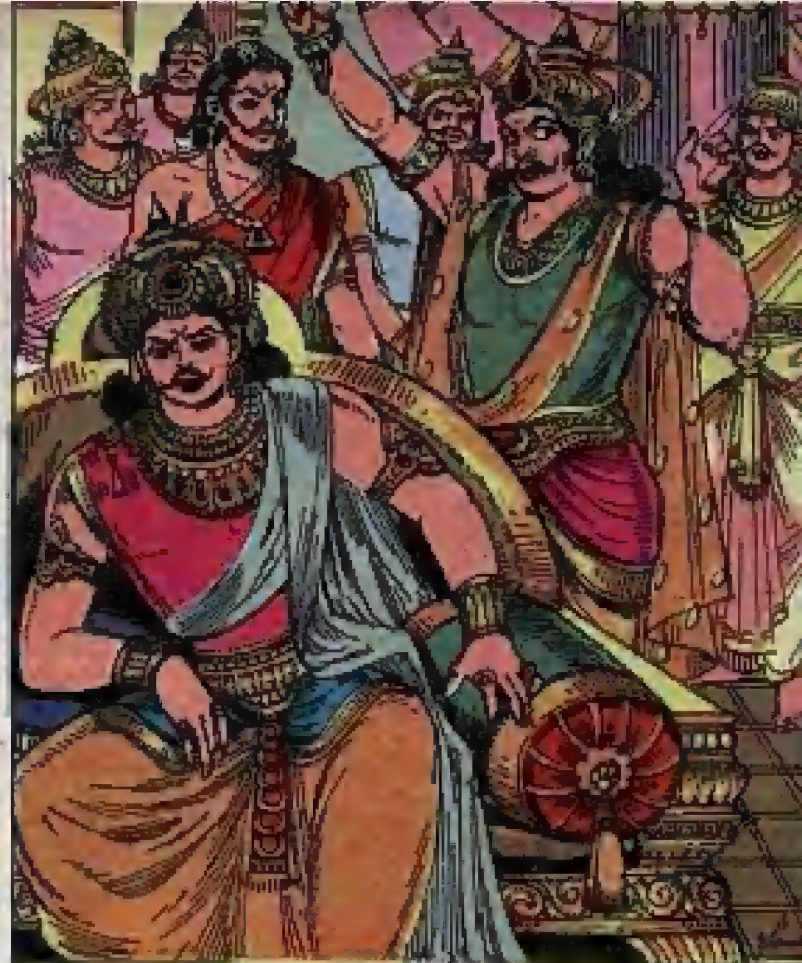
की परवाह नहीं करता। आप ही उसको डाँटकर समझा दीजिये।"

"मुझे जरूरी कार्य पर जाना है। यहाँ पर मैत्रेय नामक एक मुनि आनेवाले हैं। वे ही तुम्हारे पुत्र को उचित रूप में समझा देंगे।" यह सलाह देकर व्यास महर्षि चले गये।

महर्षि व्यास के कहे मुताबिक थोड़े दिन बाद मैत्रेय मुनि हस्तिनापुर आये। धृतराष्ट्र ने उस मुनि का उचित रूप में स्वागत-सत्कार किया, तब पूछा–"महात्मा, आप कहाँ से पधार रहे हैं?"

"तीर्थ-यात्राएँ करते मैं काम्यकवन में गया, पांडवों के साथ थोड़े दिन बिताया,

अब तुमको देखने आया हूँ। पांडव जटाएं धारणकर तथा वल्कल पहने, कंद-मूल-फल खाते जंगल में नाना प्रकार की यातनाएँ भोग रहे हैं।" मैत्रेय ने बताया।

"मुनिवर, पांडव कुशल हैं न? वे लोग अपने नियमों का उल्लंघन करने की स्थिति में नहीं हैं न?" धृतराष्ट्र ने पूछा।

"चाहे सारे विश्व में हलचल मच जाय, पर वे अपने निर्णय से नहीं डिगते। ऐसे धर्मात्मा लोगों के साथ तुम्हारे पुत्र ने बड़ा अन्याय किया है। मैंने जुए के बारे में सारी बातें सुन ली हैं।"

फिर मैत्रेय ने दुर्योधन से कहा-"सुनो, अब भी सही, तुम थोड़ी-बहुत अक्ल रखते हो तो पांडवों के साथ मैत्री करो। वे लोग महान शूर-वीर हैं। भीम ने काम्यकवन में किम्मीर नामक एक भयंकर राक्षस का वध किया है। तुम जानते ही हो कि उसने बक, हिडिंब और जरासंघ को पहले ही मार डाला है। द्रुपद जैसे बलवान राजा उनके पक्ष में हैं। कृष्ण भी उनके हितैषी व समर्थक हैं। ऐसे लोगों के साथ तुम दुश्मनी क्यों मोल लेते हो?"

ये बातें सुनकर दुर्योधन ने ताल ठोंक कर हाथ उठाये पैरों के अंगूठे से जमीन को रगड़ा। इस पर क्रोधित हो मैत्रेय ने शाप दिया-"तुम्हारी ये जाँघें भीम के गदे के आघात से टूट जायें!"

धृतराष्ट्र ने पूछा-"मुनिवर, ऐसा होने से बचाइये, हम पर अनुग्रह कीजिये।"

"यदि इससे बचना चाहे तो एक ही उपाय है। तुम्हारा पुत्र पांडवों के साथ मैत्री करे।" मैत्रेय ने उपाय बताया।

"महात्मा अपने बताया कि भीम ने किम्मीर नामक राक्षस का वध किया है। वह वृत्तांत सुनाइये।" धृतराष्ट्र ने पूछा।

"यह वृत्तांत मैं नहीं बताऊँगा। विदुर से पूछो, वही बतायेंगे। अच्छा, मैं चला।" धृतराष्ट्र से विदा लेकर मैत्रेय चले गये।

"भीम ने किम्मीर को मार डाला है न!" इन शब्दों के साथ दुख प्रकट करते हुए दुर्योधन सभाभवन को छोड़ चला गया।
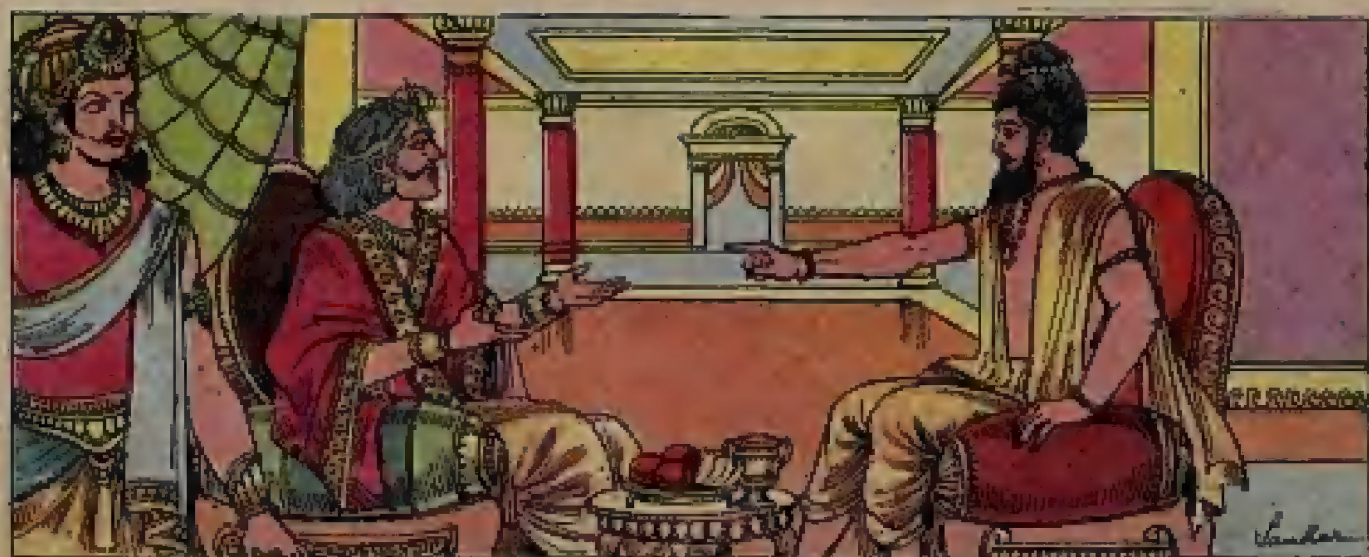
शिवपुराण

[४]

ब्रह्मा, विष्णु, महेन्द्र आदि विन्ध्य पर्वत में गये और मेनका तथा हिमवान को समझाया कि वे महादेवी की तपस्या करके उसको अपनी पुत्री के रूप में पावे। तब विन्ध्याचल में तपस्या करनेवाली महादेवी का स्त्रोत्र किया।

चतुर्दिक प्रकाश फैलानेवाला किरीट धारण कर, हज़ार हाथों से त्रिशूल इत्यादि आयुध धारण कर उनके सामने महादेवी प्रत्यक्ष हुई। इस पर ब्रह्मा इत्यादि ने उससे निवेदन किया—"हे माता, तुमने दक्ष की पुत्री के रूप में जन्म लेकर सती नाम से शिवजी के साथ विवाह करके दक्ष पर नाराज़ हो अपना देह-त्याग किया, तुम्हारे वियोग में विरक्त हो शिवजी तपस्या में लीन हो गये हैं। इसलिए तारकासुर इत्यादि राक्षस उच्छृखल हो सभी लोकवासियों को सता रहे हैं। अतः तुम मेनका और हिमवान के घर पार्वती के रूप में जन्म लेकर शिवजी के साथ विवाह करो और लोकों की रक्षा करो।"

महादेवी ने उनकी इच्छा की पूर्ति करने का वचन दिया और अदृश्य हो गयी।

इस बीच मेनका और हिमवान ब्रह्मा इत्यादि के उपदेशानुसार तपस्या में लीन हो गये। चैत्र शुक्ला प्रथमा के दिन से सत्ताईस सप्ताहों तक बड़ी भक्ति के साथ उन दोनों ने महादेवी की पूजा की। इस पर प्रसन्न होकर महादेवी उनके सामने प्रत्यक्ष हुई और वर मांगने को कहा।

मेनका और हिमवान ने कहा—"हे माता, हम तुमको देख तर गये हैं। हमको

अंतिम पृष्ठ का चित्र

सौ ऐसे पुत्र प्रदान करो जो बल, शौर्य और गुण में अपनी समता न रखते हों! तुम हमारे घर पुत्री के रूप में जन्म धारण करो और जगत के कल्याण के हेतु शिवजी के साथ विवाह करके हमको शाश्वत यश प्रदान करो।"

महादेवी उनकी इच्छाओं की पूर्ति करने का आश्वासन दे अंतर्धान हो गयी।

मेनका और हिमवान अपने घर जाकर आराम से रहने लगे। कालांतर में मेनका गर्भवती हुई और जब पांच ग्रह उच्च दशा में थे तब मैनाक नामक एक पुत्र का जन्म दिया। इसके बाद क्रमशः निन्यानवे पुत्र पैदा हुए। उनके बाद फिर मेनका ने गर्भधारण कर नौ महीने पंद्रह दिनों में आरुद्रा नक्षत्र में चैत्र शुक्ला नवमी के दिन पार्वती का जन्म दिया। उस वक़्त सारी दिशाओं में आलोक छा गया। देवताओं ने फूलों की वर्षा की। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र इत्यादि ने महादेवी का स्त्रोत्र किया।

पार्वती का जब जन्म हुआ, तब उसके शरीर पर नीलवर्ण की कांति थी, उसके चार हाथ थे, माथे पर आँख थी और उसकी आकृति कालीदेवी जैसी थी। मेनका ने उससे प्रार्थना की कि वह मामूली शिशु का रूप धारण करे। तब वह मामूली शिशु बनकर रोने लगी।

हिमवान यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ कि उसके एक पुत्री हुई है, वह पुरोहितों और ब्राह्मणों को साथ लेकर प्रसूती गृह में आया, कपूर के दीपक जलाये, कस्तूरी जल छिड़कवाया, नृत्य-गानों का आयोजन करके ब्राह्मणों के आशीर्वाद दिलाये। ब्राह्मणों को धन, धान, स्वर्ण, आभूषण तथा रेशमी वस्त्र पुरस्कार में दिये। इसके बाद वह अपने पुत्र और पुत्री के साथ सुखपूर्वक दिन बिताने लगा।

पार्वती धीरे धीरे बड़ी होती गयी। वह कभी अपनी सहेलियों के साथ खेलती तो कभी मत्त सिंहों पर सवार होकर पहाड़ों में घूमती। गुफाओं और रेतीले

टीलों पर आँख मिचौनी खेलती। कभी ऐसा खेल खेलती कि अपनी सखियों को बच्चे बना लेती और वह माँ बनती। कभी अपनी सखियों को गेंद दिखाकर कहती–"लो, यह ब्रह्माण्ड है। मैं इसे इस तरह खिलाऊँगी।" खिलौनों के साथ खेलते वक़्त उनके नाम ब्रह्मा, विष्णु, और महेश्वर रखती और कहती कि 'मैं इन सबको खिला रही हूँ।' घरौंदे बनाते वह कहती कि वह ब्रह्मा है, उनकी रक्षा करते हुए बताती कि वह विष्णु है, और उनको गिराते हुए कह उठती कि वह महेश्वर है।

इस तरह पार्वती का बचपन बीता। फिर विद्याभ्यास प्रारंभ करके सब तरह की विद्याएँ सीख लीं। वह सदा परमेश्वर का ध्यान करती, सामगान के साथ स्तुति करती और संतोष पूर्वक अपना समय बिता देती। उस वक़्त कोई उसे 'पार्वती' नाम से पुकारती तो वह बिलकुल जवाब न देती, पर कोई 'शिवानी' पुकारती तो झट जवाब देती। जब भी फ़ुरसत मिलती, सिंह पर सवार हो घूमती। उस वक़्त उसके हाथ में धनुष, बाण, शूल इत्यादि आयुध दिखाई देते। वह किसी दूसरे वाहन पर न चढ़ती और न अन्य प्रकार के आयुध ही धारण करती। कभी कभी वीणा बजाते आनंद उठाती। वह विद्याधरों से भी अच्छा गाती, नृत्य भी करती। शिवजी का चित्र बनाकर अपनी सखियों को दिखाती।

इन्हीं दिनों नारद हिमवान को देखने आया। हिमवान ने आगे बढ़कर नारद का स्वागत किया। उसकी पूजा करके उचित आसन पर बिठाया। पार्वती को बुलवा कर उसके द्वारा नारद को प्रणाम करवाया। इस के बाद उस कन्या को अपनी गोद में बिठा कर पूछा–"मुनिवर, बताइये, इस कन्या को कैसा पति प्राप्त होगा?"

नारद ने पार्वती के हाथ में गज, मत्स्य, अंकुश और रथों की रेखाएँ देख कहा–

"हिमवान, तुम्हारी पुत्री के हाथ में महादेवी के लक्षण हैं। इस के कारण तुमको अपार यश प्राप्त होगा। लक्ष्मी और सरस्वती के समान इसको आदर प्राप्त होगा और इसकी पूजा भी होगी। इसके योग्य पति तो शिवजी हैं। इसलिए बिना सोचे-विचारे शिवजी के साथ इस कन्या का विवाह कराओ।"

नारद के चले जाने पर हिमवान ने मेनका से कहा–"हमने महादेवी से प्रार्थना की थी कि शिवजी की पत्नी बनने योग्य कन्या को प्रदान करे। अब नारद की बातें इस बात की पुष्टि करते हैं।"

मेनका खुश होकर बोली–"हमारी पार्वती विवाह के योग्य हो गयी है। इसलिए आप उसके विवाह का प्रयत्न कीजिये।"

इस पर हिमवान ने मेनका को बताया–"सुनते हैं कि सती के मरने के बाद शिवजी उस के शरीर को कंधे पर डाल सारे संसार में घूमते रहें। आखिर गंगा के संगम पर कालीघाट में नृत्य करते समय विष्णु ने अपनी माया के द्वारा सती को काली देवी के रूप में वहाँ पर स्थापित किया और शिवजी को ज्ञान का उपदेश दिया। तब शिवजी वैराग्य को प्राप्त कर वीरासन लगा कर तपस्या में लीन हो गये हैं। लेकिन शिवजी भक्तवत्सल हैं। तपस्या के द्वारा उनको प्रसन्न किया जा सकता है। इसलिए हम पार्वती के द्वारा शिवजी के बारे में तपस्या करवायेंगे।"

इसी निर्णय के अनुसार हिमवान और मेनका ने पार्वती को शिवजी के प्रति तपस्या करने को नियुक्त किया।

इसके बाद मेनका और हिमवान पार्वती को साथ ले कैलास गये जहाँ शिवजी तपस्या में लीन थे। शिवजी के चारों तरफ़ गणाधिपति आयुध धारण करके खड़े हुए थे। कुछ लोग शिवजी की सेवा कर रहे थे। हिमवान को शिवजी के निकट जाने के लिए रुद्रगणों ने अनुमति दी।

११४. इग्वाज का जल प्रपात

इग्वाज नदी ब्रेजिल (दक्षिण अमेरिका) के दक्षिणी प्रदेश के पहाड़ों से निकल कर पश्चिम में ८०० मील तक बहने के बाद पारिपरना नामक नदी में मिल जाती है। इग्वाज नदी के मार्ग में कई झरने और जलप्रपात हैं। जलप्रपातों में विश्व-विख्यात प्रपात यहाँ पर दिखाया गया इग्वाज जलप्रपात है। जहाँ पर परग्वाय, ब्रेजिल व अर्जेंटाइना की सीमाएँ मिलती हैं, वहाँ से १२ मील की दूरी पर यह प्रपात है। तीन मील तक यह पहाड़ी चट्टानों पर बहकर जोड़े प्रपात का रूप धारण करता है। एक एक प्रपात १८० फुट ऊँचा होता है। नदी की एक शाखा सीधे ७६० फुट का प्रपात बन जाती है। वर्षा ऋतु में इस जुड़वे प्रपात की लंबाई १३,००० फुट तक फैल जाती है। कहा जाता है, उस वक़्त हर मिनट २८० लाख घन फुट का पानी गिरता है। विक्टोरिया और नयागरा प्रपातों से इसका पतन ज़्यादा है।

Photo by Prabhakar Mahadik

पुरस्कृत परिचयोक्ति

तोता बैठा डाल पै खाये!

प्रेषक : शम्मी, दिल्ली

Photo by Prabhakar Mahadik
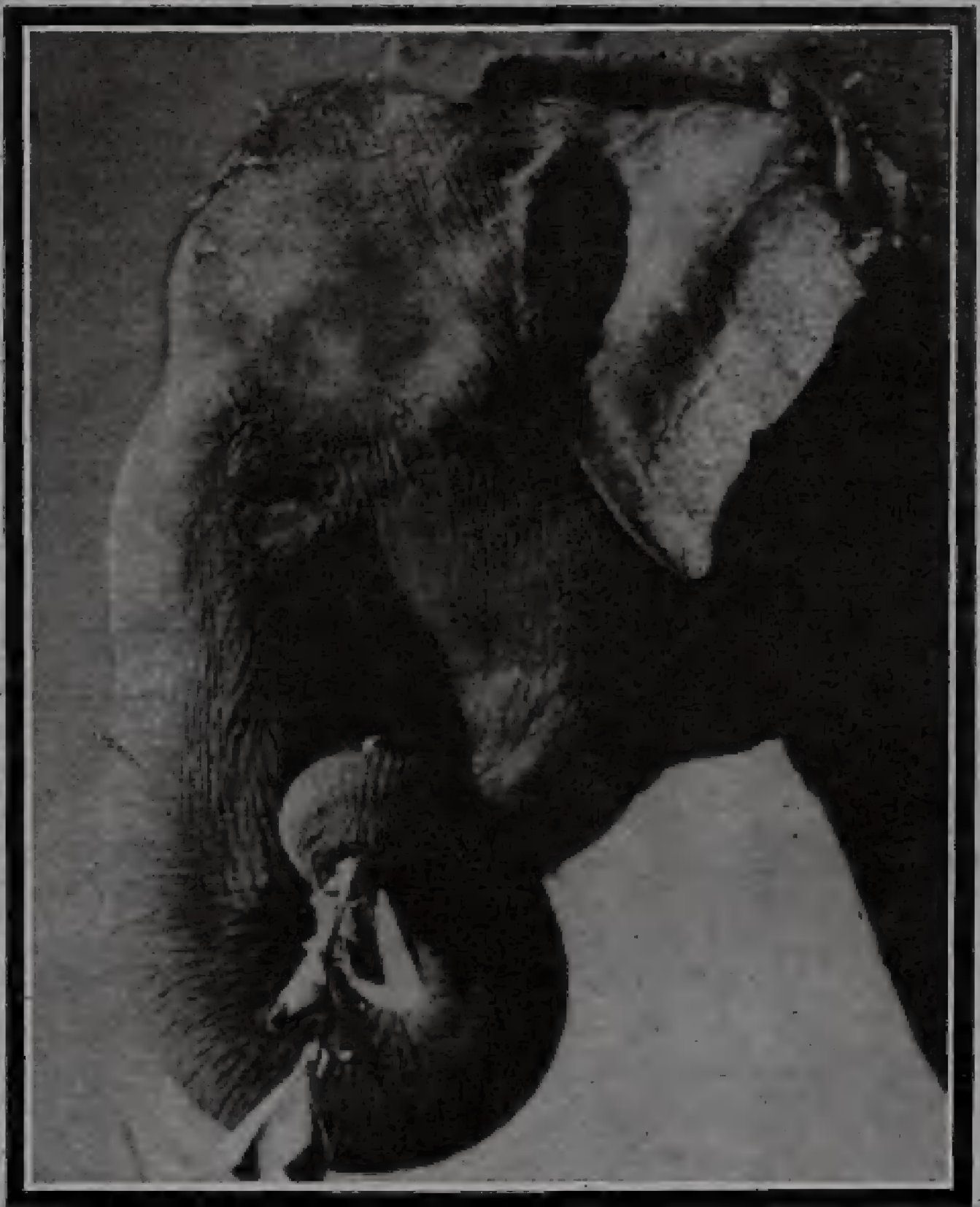
पुरस्कृत परिचयोक्ति

हाथी सूंड में डाल दबाये!

प्रेषक : शम्भी, दिल्ली

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

अगस्त १९७१ :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख १० मई १९७१ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

जून – प्रतियोगिता – फल

मई के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं। इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: तोता बैठा डाल पे खाये!

दूसरा फ़ोटो: हाथी सूंड में डाल दबाये!

प्रेषक: श्री शम्मी,
३/१८८, सुभाष नगर, नई दिल्ली

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

लेलोजी लेलो!

चिक्लेट्स लेलो!

मज़ेदार चूइंग गम

प्यारे बच्चो! तुम हरदम चबाओ चिक्लेट्स चूइंग गम
मज़ा आयेगा धम् धम् धम्, नयी जाति के, भांति-भांति के
ऑरेंज, लेमन, पेपरमिंट, टुटी-फ्रूटी चूइंग गम।

AWARDS!
WON PLENTY
YET WE DON'T SAY
WE ARE THE BEST
ONLY
WE DO OUR BEST
PRASAD PROCESS PRIVATE LTD
MADRAS-26
भारत सरकार
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
छपाई और सजावट पर राजपुरस्कार
प्रमाणपत्र